₹ २०

ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०७७ अगस्त २०२०

पुराण प्रसिद्ध ऐतिहासिक अयोध्या नगरी में

रामलला विराजे

भगवान श्रीराम के भव्यातिभव्य मंदिर निर्माण की
आधारशिला स्थापना ५ अगस्त २०२० को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की जाने के
महापर्व की हार्दिक बधाई!

अवध खुशी से नाचे

- पंकज प्रजापत

सरयू की धारा इठलाई, अवध खुशी में नाचे।
रामलला का भवन बनेगा, वेद मंत्र चल बांचे।
हुई साधना सफल सुनो रे, आज राम मतवालों।
दिए जलाओ खुशी मनाओ, आओ मंगल गा लो।
किसने बेटा किसने भाई, देखों यहाँ चढाया।
खून बहा था पानी जैसा, तब है यह दिन आया।

कोठारी से वीर अनेकों, बने नींव के पत्थर।
आजादी के बाद लगे हैं, साल सुनो हाँ सत्तर।
कारसेवकों से बलिदानी, बेटे नींव धरेंगे।
बरसों बरस पुराने अपने, वादे पूर्ण करेंगे।
हटा घोर तम आया देखो, कैसा नया उजाला।
सारी धरती पर बेटों ने, राम राम लिख डाला

● गौतमपुरा (म.प्र.)

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद २०७६ ▪ वर्ष ४१
अगस्त २०२० ▪ अंक २

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

इन दिनों आप सबसे घर-परिवार से लेकर शिक्षकों तक हर कोई एक ही आग्रह कर रहे हैं शरीर को सुदृढ़ बनाइए। अपने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी तो 'फिट इंडिया' कार्यक्रम तक लेकर आए हैं ताकि देश का भविष्य स्वस्थ सुदृढ़ बने। ये आग्रह कोई आज का आग्रह है ऐसा नहीं, हमारे धर्म ग्रंथ कहते हैं - 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'। विवेकानंद जी जैसे सन्त कहते हैं- ''मुझे भारत का ऐसा युवा चाहिए जिसकी अस्थियाँ फौलाद की हो और जिनकी धमनियों में लावा पिघलता हो।''

ऐसा नहीं कि भारत के सभी युवा घरों में सोफे पर पसरे टी.वी. ही देखकर थुलथुल हो रहे हैं। कभी-कभी कुछ उदाहरण तो पूरी दुनिया को आश्चर्य में डाल देते हैं।

इन दिनों कर्नाटक के श्रीनिवास गौड़ा बहुत चर्चा में हैं। वे एक छोटे से गाँव के किसान पुत्र हैं और उन्होंने खेती का श्रम करते हुए ही आपके तथाकथित फिल्मी हीरो के 'सिक्स पैक एब्स' को मात देते हुए 'एट पैक्स एब्स' बना लिए। लेकिन उनकी असली विशेषता यह शरीर सौष्ठव नहीं बल्कि उनकी दौड़ है। हुआ ऐसा कि कर्नाटक के परम्परागत पर्व 'कंबाला' में बैल जोड़ियों को दौड़ाना और उनके साथ स्वयं दौड़ना यह होता है। श्रीनिवास जी ने जब दौड़ लगाई और उनका विडियो वायरल हुआ तो लोगों को विश्वास नहीं हुआ कि यह बिना 'एडिट' किया हुआ वास्तविक विडियो हैं। विश्वभर में हड़कंप तो तब मच गया जब यंत्रों से उनकी गति मापी गई। श्रीनिवास जी ने ९.५५ सेकेण्ड में १०० मीटर की दूरी तय कर ली थी जबकि ओलंपिक के 'गोल्ड मेडल' विजेता विश्व चैम्पियन उसैन बोल्ट जिन्हें लोग अब तक का फर्राटा दौड़ का राजा मानते हैं को इसी १०० मीटर को तय करने में ९.५८ सेकेण्ड लगे थे।

अर्थात् अपने भारतीय किसान और युवा की शक्ति ने दुनिया को चारों खाने चित्त कर दिया है। केन्द्र सरकार उनके विधिवत् प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रही है।

आइए, हम सब भी प्रेरणा लें और 'शक्तिशाली भारत' के निर्माण में अपनी 'शारीरिक सामर्थ्य' को देश की पूंजी बना दें। 'हनुमान की कथाएँ' और 'छोटा भीम' की कार्टून फिल्में देखने से काम नहीं चलेगा। वैसा बनना भी है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- गहरा रिश्ता - डॉ. सेवा नन्दवाल ११
- समस्या का समाधान - डॉ. प्रभा पंत १९
- मेडल की जिद - लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव २५
- झूठ की आग - सत्यनारायण भटनागर २७
- वरदान या अभिशाप - रामलखन प्रजापति ३१

रूपक

- कर्मयोगी कृष्ण - डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ०५

साक्षात्कार

- अनोखी हैं बेटियाँ - डॉ. लता अग्रवाल ३४

लघुकहानी

- पर्वत की अकड़ - कमल सोगानी १५
- आजादी की तासीर - माणक तुलसीराम गौड़ ३८

कविता

- अवध खुशी से नाचे - पंकज प्रजापत ०२
- हम हैं देश हमारा देश - शंकर सुल्तानपुरी १०
- रक्षाबंधन - अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' १४
- आओ सारे साथी... - पवन पहाड़िया ३०
- डोर प्यार की - महेन्द्र सी. कपिल ४६
- श्रीकृष्ण - प्रभुदयाल श्रीवास्तव ४८

प्रसंग

- स्वराज्य के तिलक - संकलित ५१

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - ०९
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी १६
- आओ ऐसे बनें - मदनगोपाल सिंघल १८
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २२
- आपकी पाती - २६
- यह देश है वीर जवानों का - २९
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ३२
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ३९
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी ४०
- छः अंगुल मुस्कान - ४२
- विषय एक कल्पना अनेक
  - भगवती प्रसाद द्विवेदी ४४
  - शिवमोहन यादव ४४
  - नीलम राकेश ४५
- पुस्तक परिचय - ५०

चित्रकथा

- लम्बे कद का फायदा - देवांशु वत्स २१
- दुनियादारी - संकेत गोस्वामी ४३
- कितने तिरंगे - देवांशु वत्स ४९

चित्रकथा

- हम भारत की शान - रितेश प्रजापति ४२
- हिन्दुस्तान की तलवार - हिमांशु पटेल ४७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कर्मयोगी कृष्ण

रूपक

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

सूत्रधार – श्री कृष्णं शरणं मम। संकट काटो प्रभु। भारत जल रहा है। कैसी आपदा आ पड़ी हैं? सीमाओं पर कैसे–कैसे अत्याचार और अनाचार हो रहे है। क्या होगा प्रभु!

नटी – हाँ, आज तो सचमुच दुःख दर्द, चीख पुकार इन्हीं से यह दिग्मंडल भर गया है। एक समय कितने सुखी थे सब लोग। सतयुग और त्रेता, अहा! सुनते हैं और पढ़ते हैं कि स्वर्ण युग थे ये। किसी को कोई दुःख न था। सब सुखी थे।

पृथ्वी – हाँ, बेटा, सब सुखी थे। जब जब आपदा पड़ती थी मैं पुकारती थी वे चले आते थे मेरा दुःख दूर करने।

सूत्रधार – अरे पृथ्वी माता! तुम !!

पृथ्वी – हाँ बेटा! मैं पृथ्वी हूँ। जब जब मुझ पर कष्ट पड़े भगवान ने मेरी सहायता की। गीता में उन्होंने स्वयं कहा है–

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

हाँ बेटे! जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब तब भगवान अपने रूप को रचते हैं।

नटी –पर माँ इतना कष्ट, इतना आर्तनाद, तो कभी न था कि जितना आज है फिर आते क्यों नहीं भगवान! पृथ्वी माता तुम्ही बताओ न?

सूत्रधार – हाँ! तब तो सभी अधर्मियों का नाश कर डाला था। सब बुराइयों को मिटा डाला था।

पृथ्वी – वे प्रभु अब भी आ सकते हैं पर हम पुकारते

भी तो नहीं पुकारने पर वे अवश्य आयेंगे। आओ सब मिलकर एक बार उन्हें हृदय से पुकारें।

।। गीत ।।

ज्योति किरण उतरो हे! भूपर,
उतरो ज्योति किरण,
सारी जगती धन्य बनेगी,
पाकर करुणाधन
जब जब हानि धर्म की होती,
धरती बीज पाप के बोती।
अन्धकार का हृदय चीर तब,
आते जग तारन
उतरो ज्योति किरण...
ज्वाला में जलती सीमायें,
इतना धैर्य कहाँ से लाये
आओ बरसो धन बन कर,
तुम कर दो निस्तारण
उतरो ज्योति किरण...

पृथ्वी – आओ प्रभु! आओ! अब सहन नहीं होता। मुझे संभलो आह...

सूत्रधार – अरे पृथ्वी तो मूर्छित हो गई। धैर्य धारण करो माता तुम्हारा दुःख दूर होगा। अवश्य दूर होगा।

नटी – कैसी अंधेरी रात है। ठीक मध्यरात्रि है। भादौ माह की यह अष्टमी कैसी काली है। आकाश में काले मेघ घिरे हुए हैं बिजली चमक रही है।

सूत्रधार – देखो देखो! सब लोग सुनो। यह आवाज यह आहट उनके चरणों की आहट धीरे–धीरे इधर ही आ रही है। वह प्रकाश, वह ज्योति किरण–दिव्य किरण आकाश से नीचे उतर रही है। निबिडतम कारा से निकलकर बाहर आ रही है।

नटी– हाँ सुनाई तो पड़ रही है।

सूत्रधार – हाँ! वही तो है देवकी के गर्भ से उत्पन्न उस बालक को अब वसुदेव जी लिये जा रहे हैं। यमुना चरण छूने बढ़ रही है। लहरें उपर उठ रही हैं। अब नन्हें चरण छूकर उन्होंने गोकुल का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। शेषनाग उनके ऊपर छाता ताने हुए हैं।

नटी – उधर देखो। यशोदा के निकट सो रही कन्या को वासुदेव ने उठा लिया और इस दिव्य बालक को उसके स्थान पर सुला दिया है। वे कन्या को लेकर कारागार में ही लौट आये हैं। नन्द के आनन्द हो रहे हैं। सभी प्रसन्न हैं। धन्य हो रहे हैं।

।। गीत ।।

हुआ कृष्ण अवतार प्रफुल्लित,
है सारा संसार।
मगन–मन है सारा संसार।।
नाच रहे हैं कूद रहे सब,

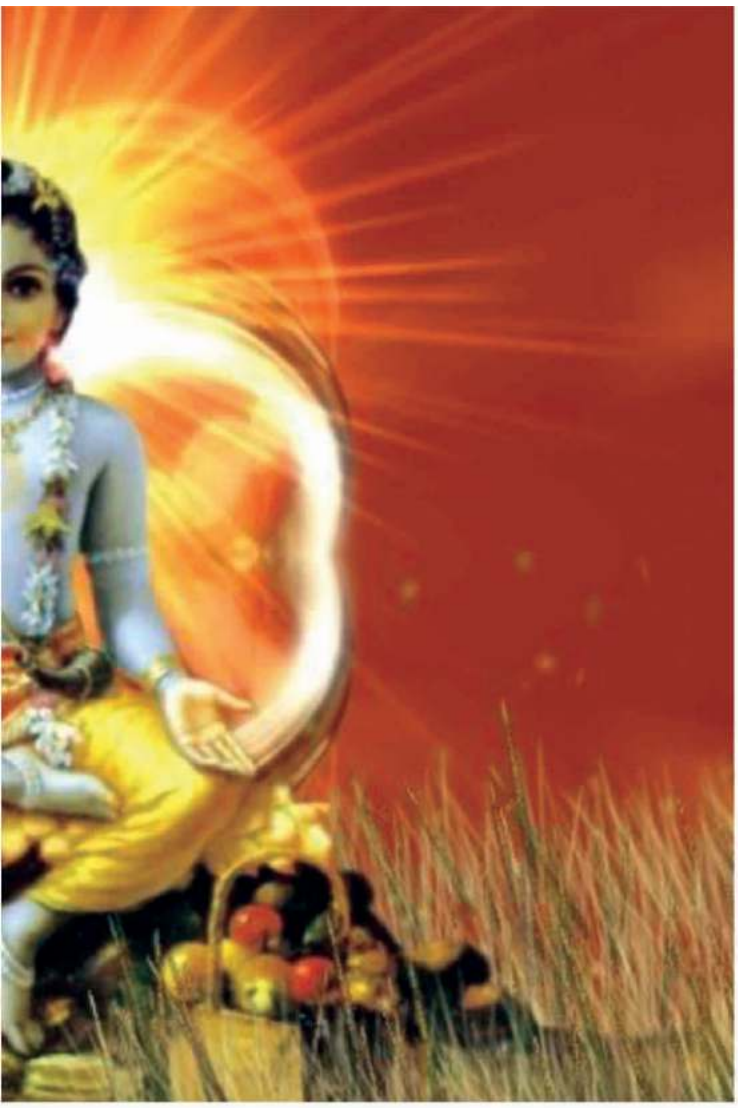

करते जय जयकार।
प्रफुल्लित है सारा संसार।।
ब्रज में जन्म लिया कान्हा ने,
लीला विविध प्रकार।
प्रफुल्लित है सारा संसार।।
भाग्यवान हैं नन्द यशोदा,
पाया सुख संसार।
प्रफुल्लित है सारा संसार।।
कष्ट हरेंगे संत जनों के,
प्रकटे जगदाधार।
प्रफुल्लित है सारा संसार।।

नटी – कंस ने उनको शैशव में ही समाप्त करने की योजना बनाई। पहले पूतना भेजी तो नन्हें कृष्ण ने उनका प्राणान्त कर दिया। तृणावर्त को भेजा तो उसकी योजना भी सफल नहीं हो पाई। अघासुर, बकासुर और कालियानाग द्वारा गो–गोपों सहित उनका नाश किसी प्रकार भी नहीं कर पाया। वीर बालक किसी बाधा से नहीं घबराते हैं। कृष्ण खूब खेलते–कूदते तथा बीच–बीच में अलौकिक लीलाओं की झलकियाँ भी ब्रजवासियों को दिखाते रहे।

नटी – कभी ऊखल बन्धन से सबको डरा देते और कभी मिट्टी खाने पर माता यशोदा सांटी लेकर खड़ी हो जाती तो मुँह खोलकर उसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के दर्शन करा देते।

सूत्रधार – वे अलौकिक बालक कहलाने लगे। सुन्दर तो थे ही फिर बच्चे किसको अच्छे नहीं लगते। नर, नारी, वृद्ध और बालक सभी चाहते थे कि वे उन्हें देखते रहें, स्पर्श करें तथा वे उनके घर जाकर भोग लगायें।

नटी– तब उन्हें रिझाने के लिए वे नित्य नई लीलाएँ करने लगे। घरों में जाकर दही और मक्खन की चोरी करने लगे। गोप वधुयें उनके लिए नित्य नया दही–मक्खन तैयार रखतीं। इसी बहाने वे उनके घर तो आयें। उनकी रूप माधुरी ने ब्रज के जन जन को मोहित कर दिया था।

सूत्रधार– कृष्ण बड़ी सुरीली बाँसुरी बजाते थे। उसकी दिव्य स्वर लहरी गोपिाओं को उनके प्रेरित मधुर प्रेम में निमग्न कर देती थीं।

नटी– बांसुरी की धुन सुनकर गौएं अपनी भोली आँखों से टकटकी लगाकर उन्हें निहारा करती थीं। ब्रज की सम्पूर्ण प्रकृति उन पर न्यौछावर हो जाती। गोपिकायें विनती करती थीं। हे श्याम सुन्दर। हमें अपनी मुरली की धुन सुना दो। वैसे तो यह हमें गृह कार्य नहीं करने देती परन्तु हमारा मन इस मुरली की स्वर लहरी में डूब गया।

एक बार फिर बजा दो श्याम सुन्दर प्यारे।

बाँसुरी अपनी बजा दो।
उधर पर घर फूंक से नवरागिनी मधुमय सुना दो।।
गोपिकाएँ नाम सुनकर दौड़ पद– पंकज गहेंगी।
छोड़ गृह जंजाल सारे, मुग्ध–मन लिपटी रहेंगी।।
बाँधकर अब प्रीति–नूपुर, रास का मंडल सजा दो।
बाँसुरी अपनी बजा दो।
पुलिन यमुना का बनेगा मंच कुंजें प्रकृति सुन्दर।
चाँदनी भी उतर भूपर, चूम लेगी चरण सत्वर।।
फिर बजाओ श्याम सुन्दर, राग में सब जग डुबा दो।
बाँसुरी अपनी बजा दो।
कृष्ण प्यारे साध लो स्वर, आज नाचो गीत गाओ।
अमृत वर्षा मेघ बनकर, मन मयूरों को नचाओ।।
हाय प्यासे चातकों को, प्रेम का अमृत पिला दो।
बाँसुरी अपनी बजा दो...।

सूत्रधार – इतना राग, मन की रागात्मक वृप्तियों को ऐसा समर्पण? श्याम सुन्दर पिघल जाते। राधा को अपने साथ लेकर चन्द्रिका रजनी में यमुना पुलिन पर रास रचाते। वह आनन्द जब बाँसुरी की तान, मृदंग, चंग आदि वाद्य बज उठते और मीठी रागिनी के आलापों पर मधुर घुंघरू झनक उठते।

नटी– पर यह सब एक दिन समाप्त हो गया। कंस के भेजे हुए अक्रूर कृष्ण–बलराम को लिवाने आ गये। गोकुल उस दिन खूब रोया। गोप बालाऐं मूर्छित हो गई। यशोदा माँ अपने कन्हैया को आँचल में छिपाने को दौड़ी।

सूत्रधार– परन्तु उन्हें कर्तव्य का पथ पुकार रहा था। मथुरा न जाते तो कुवलयापीड़ हाथी, मुष्टिक, चाणूर तथा स्वयं कंस का मान कैसे मर्दन होता?

नटी– जो कुछ किया दूसरों के लिए, दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए किया। ''सर्वे सन्तु निरामयाः'' मथुरा की गद्दी पर शूरसेन को बिठाया तथा मथुरावासियों की सुरक्षा के लिए ही द्वारिका में गढ़ का निर्माण किया। उनके सामने जनहित, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सूत्रधार – उनका कार्यक्षेत्र गोकुल से मथुरा, मथुरा से द्वारिका तथा द्वारिका से कुरुक्षेत्र हुआ। उज्जैन में गुरूदेव सांदीपनी जी से उन्होंने शिक्षा ग्रहण की थी। वे जहाँ–जहाँ गये भावात्मक सम्बन्ध बनाते गये, जोड़ते गए।

नटी– महाभारत युद्ध के समय उन्होंने न्याय पक्ष को जिताने में अपनी सारी शक्ति लगा दी। अर्जुन युद्ध नहीं करूंगा कहकर चुप हो गया तो उन्होंने ज्ञान, कर्म और भक्ति का उपदेश देकर उसे क्षत्रिय रूप की पुनर्प्रतिष्ठा की थी।

सूत्रधार – शस्त्र के स्थान पर शास्त्र की विजय हुई। अन्याय पर न्याय की विजय हुई। विजय का श्रेय भगवान श्री कृष्ण को ही तो है। नीति, कूटनीति और मानव धर्म को जितना उन्होंने समझा उतना कोई नहीं समझ पाया।

नटी – इसीलिए जनमानस ने उन्हें पहले भगवान की उपाधि दी तथा उससे ऊपर ईश्वर की उपधि से विभूषित कर दिया।

नटी – देवकी और यशोदा ने माँ बनकर उन्हें दुलारा, गोपों ने सखा भाव से निहारा तथा गोपियों ने उनमें मधुरभाव का समावेश कर दिया।

सूत्रधार – इस मधुर भाव की परिणति राधा के प्रति प्रेम में हुई। वे वृन्दावनेश्वरी बनीं, आराध्या बनी। कृष्ण के साथ यह राधा नाम सदा के लिए सम्बद्ध हो गया।

नटी – भक्त मीरा ने उन्हें इसी भाव से भजा। उनके लिए विष का प्याला पिया। सूर के श्याम और नरसी के साँवलिया ये ही तो हैं। भावों से उच्चकोटि रसिक चैतन्य महाप्रभु के श्याम सुन्दर वे ही तो थे।

सूत्रधार– वे कण कण में समाये हुए हैं उनकी मूर्तियाँ युग–युग से पाषाण में उत्कीर्ण की गई तथा पूजा की वस्तु बन गई।

नटी – आज उनका जन्म दिन है। भादौ मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी है। इसी रात उनका अवतरण हुआ था। प्रतिवर्ष उनका जन्म दिन मनाते हैं हम और उनके श्रीचरणों में श्रद्धा के सुमन अर्पित करते हैं।

सूत्रधार – वे हमें प्रेरणा दें और शक्ति दें कि देश की अखण्डता और एकता के लिए हम निरंतर प्रयत्न करते रहें। जिस प्रकार उनकी भक्ति ने सारे देश को भावनात्मक एकता में बांधा था उसी प्रकार अब भी हम एकता में बंधे।

● **नोएडा (उ.प्र.)**

संस्कृति प्रश्नमाला

- *लंका पहुँचने के बाद श्रीराम सेना के किस वानर वीर ने रावण के महल में जाकर उससे मल्लयुद्ध किया?*
- *अज्ञातवास के पहले पाण्डवों ने अपने शस्त्रास्त्र कहाँ छिपाये?*
- *दक्षिण भारत के अय्यर ब्राह्मणों ने चार हजार साल पहले सात समन्दर पार कहाँ अपना राज्य स्थापित किया था?*
- *श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब ने कुष्ठ रोग से मुक्ति के लिए किस स्थान पर सूर्य की तपस्या की?*
- *महर्षि दधीचि की अस्थियों से किस भीषण अस्त्र का निर्माण हुआ?*
- *हिन्दवी स्वराज्य की जल सेना का सेनापति कौन था?*
- *त्रिकोणमिति के सिद्धान्त ज्ञात इतिहास में सर्वप्रथम किसने दिये?*
- *आजाद और भगतसिंह के खिलाफ गवाही देने वाले देशद्रोही फणीन्द्र घोष को मृत्युदण्ड किस क्रांतिकारी ने दिया?*
- *किस युद्ध को मरुभूमि का महाभारत कहा जाता है?*
- *राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक कौन थे?*

(साभार : पाथेय कण)

(उत्तर इसी अंक में)

हम हैं देश : हमारा देश

कविता

शंकर सुल्तानपुरी

हम हैं देश, हमारा देश
हम बढ़ते तो बढ़ता देश
हम हैं भारत की तकदीर
बदल रहे हैं हम तस्वीर।

निर्धन, दुर्बल कहे न कोई
हम धनवान, वीर बलशाली
शस्य, श्यामला भारत माता
है फलदायक डाली-डाली।

धर्म, ज्ञान की पावन गंगा
सत्य, प्रेम की बहती धार।
झगड़ा नहीं जात, मजहब का,
हमको है स्वदेश से प्यार।
प्रेम, एकता का संदेश-
हम हैं देश, हमारा देश।

आन-बान है, गर्व न थोड़ा,
स्वाभिमान पर मर मिटते हैं।
हम पौरुष, साहस के पुतले,
दुश्मन कब सम्मुख टिकते हैं?

शोषण, अत्याचार, दमन से,
कभी न हमने मानी हार।
कभी झुके हम? गिरे, उठे हम,
हुए नहीं कुंठित, लाचार।

हम प्रतीक हैं वीर भरत के,
अभिमन्यु, लवकुश के वंशज,
राम, कृष्ण के पावन पग की-
माथे पर अंकित अब तक रज।
युग-युग का यह गौरव शेष
हम हैं देश, हमारा देश।

● लखनऊ (उ.प्र.)

गहरा रिश्ता

कहानी

सेवा नंदवाल

राकेश सुबह से घर की बालकनी में बैठा बाजार की रौनक निहार रहा था। महिलाओं को सजधज कर राखी के धागों, फल–मिठाईयों की जोरदार खरीदी करते और अपने भाईयों को राखी बांधने जाते देखा उसका मन अंदर ही अंदर दुख रहा था। उसे राखी बांधने वाला कोई नहीं था। दो महीने पूर्व ही उसकी इकलौती बहन अनन्या एक दर्दनाक दुर्घटना में मारी गई थी। बहन की फोटो सामने रखी थी जिसे देखकर उसकी रुलाई फूट

रही थी।

उस दिन की घटना अनायास उसे स्मरण हो आई। बीच सड़क पर दो सांड मस्ती करते हुए रौद्र रूप से लड़ने लगे थे। लोग भयभीत होकर उन्हें भगाने का प्रयास कर रहे थे पर वह तो ऐसे गुत्थमगुत्था थे कि अलग होने का नाम नहीं ले रहे थे। यकायक एक सांड लड़ाई का मैदान छोड़कर एक बच्चे के पीछे लपक पड़ा। इस अप्रत्याशित हमले से घबराया बालक जोर–जोर से चीखने चिल्लाने लगा। सांड के उग्र रूप को देखकर कोई उस बालक को बचाने में भी सफल नहीं हो सका।

उन्मत्त सांड सींग में लपेटकर बालक को उछालना चाहता था कि देवदूत सी एक युवती उसे बचाने प्रकट हो गई। उसने बालक को एक ओर निकालने के लिए जोरदार धक्का दिया। बालक तेजी से एक तरफ को लपक गया मगर वह युवती सांड की चपेट में आ गई। सांड ने अपना सारा संचित क्रोध मानो युवती पर निकाल दिया उसने पूरी ताकत से युवती के पेट में अपने सींग घुसाकर उछाल दिया।

मदद के लिए लोग हिम्मत करके आगे बढ़ते तब तक वह लहुलुहान हो चुकी थी। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया जहाँ परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया गया। वह अनन्या थी, उसकी एकमात्र बहन जो एक बच्चे की जान बचाने के लिए स्वयं की जान गवां बैठी थी।

वही घटना स्मरण कर राकेश की आँखों से अविरल अश्रुधार बहने लगी। पिछली राखी पर घर का माहौल कितना खुशनुमा था। अनन्या इठलाते हुए फरमाईश कर रही थी– ''भैया! में आज तुमसे मोबाईल फोन लूंगी।'' ''अरे तो पहले बताना था अभी एकाएक कहाँ से लाकर दूंगा? अच्छा मोबाईल ढूंढने में समय लगेगा फिर उतने पैसों का इंतजाम भी करना पड़ेगा।'' राकेश ने विवशता दर्शाई। अनन्या उलाहना दिए बिना नहीं चुकी– ''क्या भैया! आपको जेब खर्च से बचाना चाहिए था। आपको मालूम है कि राखी पर बहन को उपहार देना पड़ता है।''

''चलो बाबा गलती हो गई कान पकड़ता हूँ। वादा रहा अगले वर्ष बहुत अच्छा मोबाईल तुम्हारे पास होगा'' – राकेश ने कान पकड़ते हुए कहा। वह प्यारी बहन अनन्या को दुखी नहीं करना चाहता था।

अब अनन्या इस दुनिया में नहीं थी इसके उपरांत वह मोबाइल फोन खरीद लाया था और बालकनी में बैठ बाजार की चहलपहल देख रहा था। कभी उसकी निगाहें आसमान पर उठकर स्थिर रह जाती मानो अभी वहाँ से उसकी बहन उतर पड़ेगी। माँ सुबह से उसे सांत्वना दिए जा रही थी – ''जिसकी बहन नहीं होती उसकी कलाई भी सुनी नहीं रहती। चल रो मत मैं पड़ोस की स्नेहा से राखी बंधवा देती हूँ। राकेश ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी थी और खामोश बैठा यहाँ वहाँ नजरें चुराता रहा।

थोड़ी देर पश्चात दरवाजे पर ठक–ठक हुई तो राकेश ने पूछ लिया– ''कौन है?'' किसी ने जवाब नहीं दिया और दोबारा दस्तक कर दी। खिन्न मन से राकेश उठा और दरवाजा खोल दिया।

सामने का दृश्य देखकर वह भौंचक्का रह गया। एक सुंदर लड़की हाथों में राखी का थाल सजाए उसके द्वार पर खड़ी थी। उसके मुँह से विस्मयपूर्वक निकल गया– ''तुम?'' ''हाँ मैं उर्वशी – ''इठलाते हुए उसने परिचय दिया। ''क्या इंद्रलोक से आई हो?'' – राकेश ने पूछ लिया। ''बिलकुल ठीक पहचाना, इंद्रपुरी कॉलोनी से आई हूँ, आप राकेश हो ना?''– बिंदास अंदाज में वह बोली। ''हाँ''– राकेश ने स्वीकारा। ''मैं आपको राखी बांधने आई हूँ।''– मुस्कुराते हुए वह बोली। राकेश आश्चर्य से भर उठा– ''मुझे किस रिश्ते से?''

''रिश्ता तो बहुत गहरा है। याद है कुछ महिने पहले आपकी बहन ने सांड के प्रकोप से एक बच्चे की जान बचाते हुए अपने प्राण गंवा दिए थे''– गंभीरतापूर्वक उर्वशी बोली। ''हाँ उस दुर्घटना को मैं कैसे भूल सकता हूँ''– राकेश भीगे स्वर में बोला।

''जिस बच्चे को बचाया गया था मैं उसकी सगी

बहन हूँ। मुझे पता लगा था कि अनन्या आपकी एकमात्र बहन थी इसलिए सोचा आज का दिन आप पर बहुत भारी पड़ेगा अगर मैं नहीं पहुँची तो''– उर्वशी बोली।

राकेश टुकुर–टुकुर देख रहा था, बोलने के लिए उसके पास शब्द नहीं थे। ''यह मत समझना कि मैं कोई उपकार कर रही हूँ या दया दिखा रही हूँ... बस मेरी अंतरात्मा ने कहा। मेरा एक छोटा भाई है अब आप के रूप में बड़ा भाई और मिल गया''– उर्वशी ने कहा।

माँ न जाने कब से आकर खड़ी हो बातें सुन रही थी, बीच में बोल पड़ी–''चलो अच्छा हुआ तुम आ गई, सुबह से उदास बैठ यह बहन का इंतजार कर रहा है।'' ''अच्छा यह बताओ भैया मुझे उपहार में क्या दोगे?'' उर्वशी पूर्ववत् अंदाज में पूछने लगी। ''तुम्हें क्या चाहिए?'' माँ ने उसके चेहरे को घूरते हुए पूछ लिया। उर्वशी खामोश रही तो राकेश ने कह दिया– ''मैं तो यह मोबाइल दूँगा, इस राखी पर अनन्या को देने का वादा किया था।'' ''अरे वाह! मुझे भी इसकी सचमुच जरूरत थी''– प्रसन्नता प्रदर्शित करते उर्वशी ने कहा।

राकेश को यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि उपहार उर्वशी को पसंद आया। ''लेकिन एक शर्त है''– उर्वशी ने कहा तो राकेश चौंककर उसकी तरफ निहारने लगा। उर्वशी फिर भी खामोश रही तो उसने पूछा– ''क्या है बताओ।'' ''यही कि प्रतिदिन आप मेरे हालचाल पूछेंगे और मैं इस मोबाइल से जवाब दूंगी और हाँ अब आप उदास नहीं रहेंगे क्योंकि मैं आपकी बहन आ गई हूँ। पता नहीं अनन्या का स्थान ले सकूंगी या नहीं पर मैं पूरी कोशिश करूंगी''– कहते हुए अचानक उर्वशी सिसक पड़ी।

माँ ने हाथ बढ़ाकर उसके आँसू पोछे और कंधों को थपथपाते सांत्वना दी तथा अपने साथ अंदर ले जाने लगी।

● इन्दौर (म.प्र.)

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

गोपी ने मोहन के बारे में राजन से कहा - 'इसके पापा की सासू माँ मेरे पापा की भाभी की भी सासू माँ है।' गोपी और मोहन आपस में रिश्ते में क्या लगेंगे?

(उत्तर इसी अंक में)

रक्षाबन्धन

कविता

अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

बहन कर रही है भाई का
रोली, टीका से अभिनन्दन।
यह त्यौहार है रक्षाबन्धन।
देखो भैया वचन निभाना,
इन धागों का मोल चुकाना,
जब भी संकट पड़े देश पर
भारत माँ की लाज बचाना
हँसते-हँसते करना अर्पित
अपना तन, मन, अपना जीवन।
दिवस, रैन और साँझ-सकारे,
सदा रहेंगे साथ तुम्हारे
राखी के इक-इक धागों में
बँधे हुए आशीष हमारे
ऐसे फैले सुयश तुम्हारा
जैसे गमक रहा चन्दन वन।
यही बात सबका कहना है
तुमको अच्छाई गहना है
कीचड़ के अंदर भी तुमको
कमल सरीखे ही रहना है
अच्छाई का होता आया
युगों-युगों से पूजन, वन्दन।

● लखनऊ (उ.प्र.)

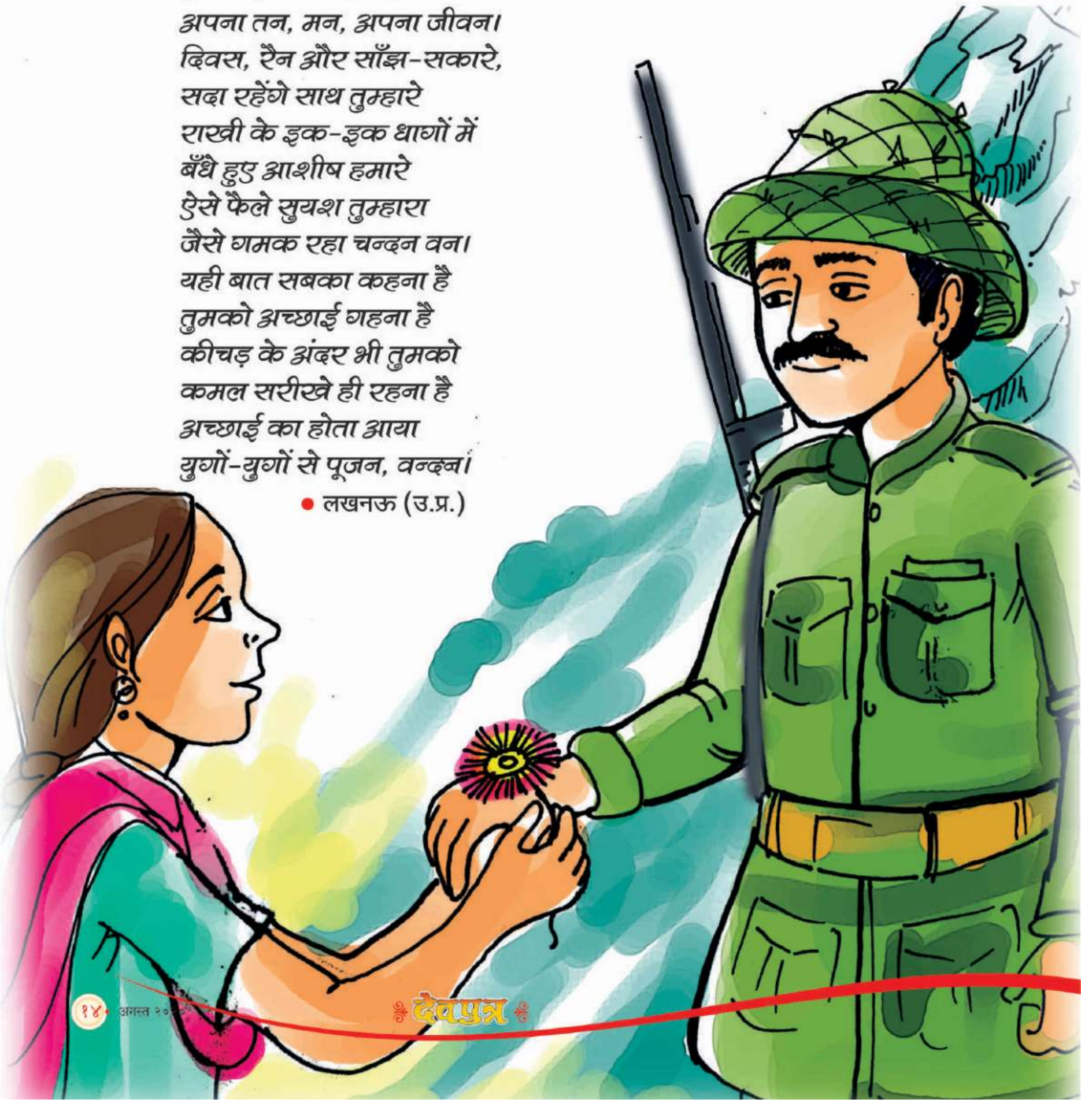

पर्वत की अकड़

लघु कहानी

कमल सोगानी

एक विशाल पर्वत के नीचे नदी बहा करती थी। नदी और पर्वत में बड़ी दोस्ती थी। एक दिन पर्वत ने बड़ी अकड़ के साथ कहा– ''नदी बहन् तुम तो मौसम की गुलाम हो, कभी सूख जाती हो तो कभी लबालब भर जाती हो। अरे मुझे देखो... मौसम कैसा भी हो, लेकिन मैं कभी घटता बढ़ता नहीं, हर मौसम की मार अपने सीने में हँसते–हँसते सहता रहता हूँ और वैसे तुम्हारी औकात ही क्या है, जब कभी कभी बड़े बांध बनते हैं, तो उसमें तुम्हारे पानी को छोड़ कर गुलाम बना दिया जाता है।''

नदी बोली– ''पर्वत भाई ! तुम्हारा ऐसा सोचना या अपने आप पर घमण्ड करना सरासर गलत है। तुम्हें और मुझे इसी प्रकृति ने बनाया है। दोनों का रूप अलग अलग है, लेकिन तुम से हर बात में मैं दो कदम आगे हूँ।''

''छोटे मुँह बड़ी बात मत करो'' पर्वत हँसते हुए कहने लगा– ''चलो, यह तो समय ही बताएगा कि कौन बड़ा? कौन छोटा है, किसका हृदय किससे विशाल है?''

नदी बोली– ''तुम्हारा ऐसा सोचना गलत है। इस प्रकृति की कोख में कोई छोटा बड़ा नहीं सब समान है।''

कुछ दिनों बाद गर्मी का मौसम आया नदी फिर सूख गई। पर्वत ने फिर व्यंग्य बाण कसे– ''तुम्हारी सूखी काया देखकर तो ऐसा लगता है मानो कोई रेगिस्तान है, दूर–दूर तक रेत ही रेत है। लेकिन नदी चुप रही।''

जब बारिश आई तो नदी लबालब भर गई। एक दिन बहुत जोर का तूफान आया। एक बिजली पहाड़ की चोटी पर आ गिरी, जिससे उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा लुढ़कते–लुढ़कते नदी में आ गिरा। इस कारण पहाड़ का सौन्दर्य भी उजड़ गया। अब वह खण्डहर दिखाई देने लगा।

जब तूफान थमा तो नदी ने मुस्कराते हुए कहा– ''पर्वत भाई! तुम्हे तो अपनी विशाल देह पर बड़ा घमण्ड था न? एक बिजली की मार सहन न कर सके? अरे, मुझे देखो। इस तूफान में मेरे जिस्म पर कई बिजलियाँ गिरी, लेकिन मैंनें सबको हँसते–हँसते सीने में उतार लिया, यहाँ तक कि तुम्हारी देह का भारी भरकम हिस्सा भी मेरे तलवे में औंधा पड़ा है, ऊंचाई से मैंनें उसकी भी मार सहन की है। अब तुम्ही बताओ विशाल हृदय किसका है, मेरा या तुम्हारा?''

पर्वत झेंपते हुए बोला– ''नदी बहन। तुम सचमुच विशाल हृदय वाली हो।'' अब मैं समझ गया तुम मेरे शीश से मीलों नीचे गिरकर भी कभी टूटती नहीं जबकि मैं गिरने से ऐसा टूटता हूँ कि फिर कभी जुड़ नहीं सकता। तुम्हारी अद्‌भुत एकता व विशाल ताकत के आगे मैं नतमस्तक हूँ।''

● **भवानीमंडी (राज.)**

राफेल उड़ाने वाले दीपक विद्याभारती के पूर्व छात्र

२६ जुलाई २०२० बहुचर्चित लड़ाकू विमान राफेल की पहली खेप अम्बाला (भारत) पहुँची तो मानो सेना ही नहीं हर भारतीय का आत्मविश्वास नए आसमान पर जा पहुँचा। इस राफेल को उड़ाकर लाने वाले सौभाग्यशाली रणबांकुरों में एक स्क्वाड्रन लीडर दीपक चौहान का यह परिचय जानकर वक्ष और भी गौरव से भर उठता है कि वे **विद्याभारती** के पूर्व छात्र रहे हैं। १९८६ में मैनपुरी के तिंदौली कस्बे में जन्मे दीपक चौहान की प्राथमिक शिक्षा सरस्वती शिशु मंदिर, मैनपुरी (उ.प्र.) में हुई। यही से नैनीताल के घोड़ा खाल सैनिक स्कूल में भरती हो १२ वी उत्तीर्ण की व २००३ में एनडीए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे यहाँ प्रथम आए और २००७ में कमीशंड हुए। दीपक चौहान राफेल के पूर्व मिराज और जगुआर भी कुशलता से उड़ा चुके हैं। हमें अपने युद्धकुशल पूर्व छात्र पर गर्व है।

|| स्तम्भ ||

स्वयं बनें वैज्ञानिक : दो आँखें एक निशाना

आलेख	अनुवाद
डॉ. राजीव तांबे	सुरेश कुलकर्णी

आज हम आपको बताने जा रहे है कि आँखों का एक ही निशाना कैसे होता है। चलो इसके लिए सामग्री क्या लगेगी यह लिख लीजिए।

टेबल

कुर्सी

एक रंगीन मनका

एक छीली हुई पेन्सिल

अब शुरु करते है अपना काम –

एक लड़का टेबल के पास स्थित कुर्सी पर बैठेगा। उससे एक मीटर दूर रंगीन मनका रखो, यह मनका उसका निशाना मतलब टार्गेट है। अब उस लड़के ने एक हाथ में छीली हुई नुकीली पेन्सिल लेकर, एक आँख बंद कर, उस पेन्सिल की नोक उस मनके को लगाना है। यह इतने जल्दी नहीं लगेगा। फिर दूसरी आँख बंद करके यह पुनः प्रयास करें फिर भी नहीं जमा तो दोनों आँख खुली रखकर नोक उस मनके को लगाने का प्रयास करें। अब आपको सफलता मिलेगी।

यह क्यों होता है? क्या है इसका राज। चलो बता ही देते हैं।

अपनी आँखों में रेटिना होता है तथा उसके पीछे शंकु आकार की परछाई होती है। यह पढ़ने में काम आती है। दाँये या बाँये के कोने से आने वाले व्यक्ति को हम देख सकते हैं इसक यह कारण है कि हमें वह चीज या व्यक्ति हमें आँख के कोने से दिखती है परन्तु दोनों आँखों से देखने पर आँखों की कार्यक्षमता या देखने की दृष्टि दुगुनी हो जाती है। दाँये या बाँये आँख से हम एकल देखते हैं इसलिए देखने की क्षमता इकहरी होने से पूर्ण रूप से देखने में कमी महसूस होती है इस कारण हम उस चीज या व्यक्ति का विश्लेषण पूर्ण रूप से नहीं कर पाते हैं। हमारा दिमाग भी इसी कारण पूर्ण क्षमता से कार्य नहीं कर पाता, इसके विपरीत दोनों आँख से वह चीज हमें स्पष्टता से नजर आती है।

अब गृहकार्य

आप पेन्सिल की जगह आलपिन लेकर देखे या सुई ले। फिर क्या होता है? जितनी चीज छोटी उतना मजा बड़ी यह आपके ध्यान में आयेगा।

आपका प्रयोग कैसे रहा यह हमें लिखना न भूलना। तब तक विराम। फिर मिलेंगे अगले माह में।

● पुणे (महा.)

चित्र बनाओ

● राजेश गुजर

बच्चो, मछली का चित्र

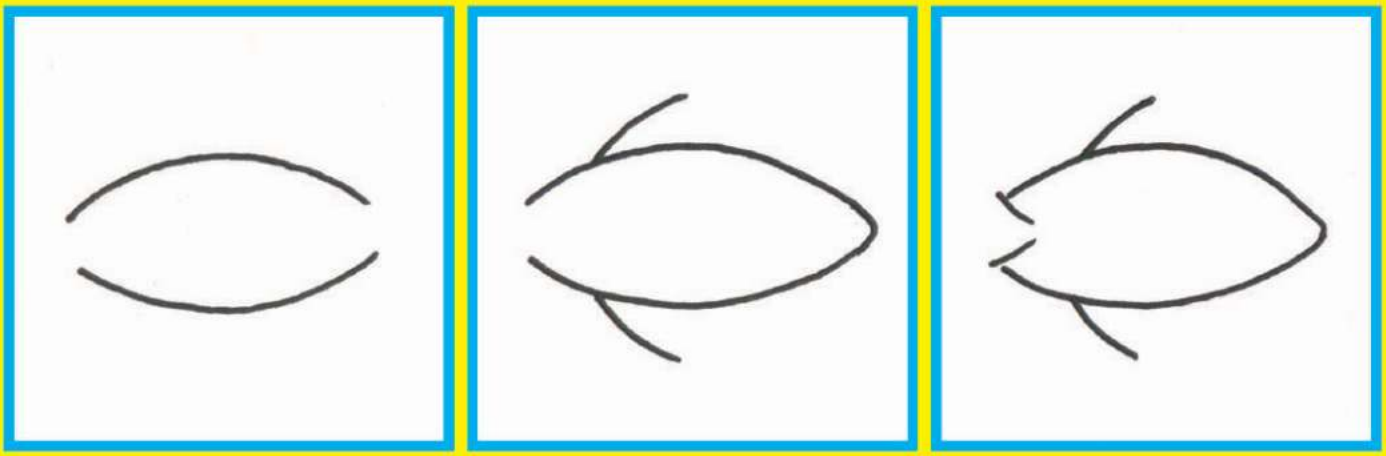

आओ ऐसे बनें

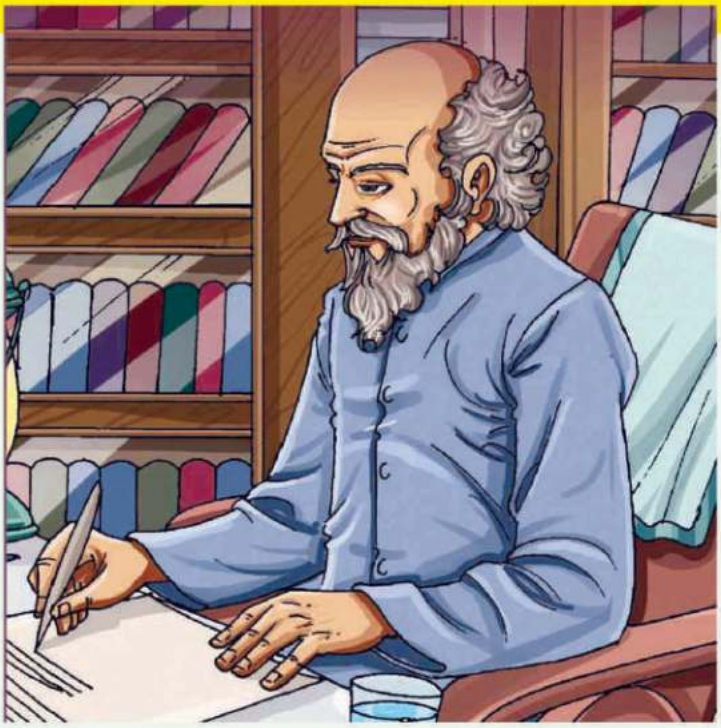

विलक्षण विद्यार्थी

– मदनगोपाल सिंघल

प्रयाग के एक हाई स्कूल की एक कक्षा में अनुवाद का कालखण्ड चल रहा था। अध्यापक महोदय अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए बालकों को हिन्दी का एक पाठ लिखा रहे थे।

अध्यापक झुंझला उठे।

''इस पाठ का अनुवाद करना है तुम्हें'' उन्होने कहा– ''मैंने यह इमला (श्रुतलेख) नहीं बोली है। और कहते ही उन्होंने वह कापी उस बालक की ओर ही फेंक दी।

''मैंने अनुवाद कर लिया है मास्टर जी!'' बालक ने आगे बढ़ कर कॉपी को पुनः अपने अध्यापक की मेज पर रखते हुए कहा– ''आप देखें तो।''

''किन्तु तुमने यह अनुवाद किया कब?'' अध्यापक ने आश्चर्य के साथ बालक की कॉपी खोलते हुए पूछा।

''आपके पाठ बोलने के साथ ही साथ बालक ने उत्तर दिया– ''आप बोल रहे थे, मैं लिख रहा था और उसी समय उसका अनुवाद भी करता जा रहा था।''

अध्यापक महोदय ने कॉपी देखी। बालक द्वारा किये गये अनुवाद में एक भी भूल नहीं थी। उनके आश्चर्य की सीमा न रही। वह बालक के मुख की ओर देखते रह गए।

उस बालक का नाम था **पुरुषोत्तमदास टण्डन**– हमारे प्रमुख राष्ट्रीय नेता और मार्गदर्शक जिनकी स्पष्टवादिता, दृढ़ता और साथ ही जिनके व्यक्तित्व पर हम सभी को गर्व रहा है।

आसानी से बनाओ, रंग भरो।

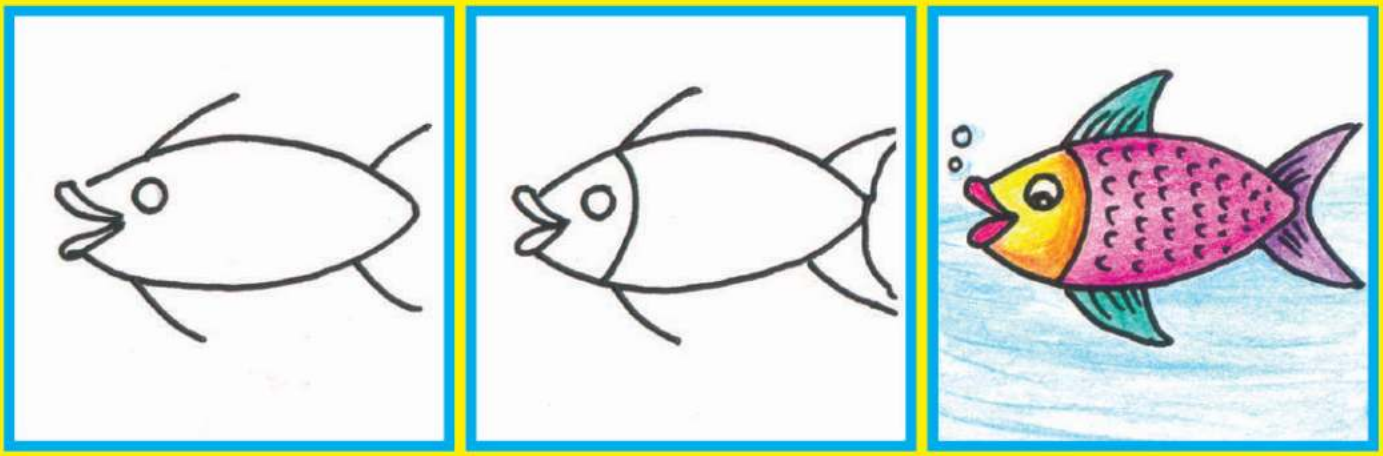

समस्या का समाधान

कहानी

डॉ. प्रभा पंत

रुनझुन अपने माता–पिता से दूर ननिहाल में रहती थी। जब वह मात्र तीन–चार वर्ष की थी, उसकी माँ की नौकरी लग गई। रुनझुन के माता–पिता को अपनी बेटी की देखभाल के लिए घर पर आया रखनी पड़ी। रुनझुन के खाने–पीने और देखभाल का दायित्व आया को सौंपकर, वह दोनों निश्चित होकर अपने–अपने काम पर चले जाया करते थे। यद्यपि आया रुनझुन को उचित समय भोजन–पानी दे दिया करती थी, किन्तु वह न उसे माँ की तरह दुलारती थी, न पिता की तरह उसके साथ खेलती थी और न बातें ही किया करती थीं। रुनझुन को जब भी माता–पिता की याद आती तो वह जोर–जोर से रोने लगती थी। उसे चुप कराने के लिए आया अपनी समझ के अनुसार कभी झूठी–सच्ची बातें कहकर और कभी टी.वी. में कार्टून दिखाकर, रुनझुन का मन बहलाती हुई जैसे–तैसे उसे सुला दिया करती थी।

धीरे–धीरे नन्हीं रुनझुन उदास रहने लगी। वह समझने लगी थी कि आया उससे झूठ बोलती है। उसने माँ को याद करके रोना तो छोड़ दिया, पर वह न किसी से बात करती थी, न खिलौनों से खेलती थी और न कार्टून देखने से उसका मन बहलता था। रुनझुन के पास एक गुड़िया थी जो उसके तीसरे जन्मदिन पर नाना–नानी ने उसे उपहार में दी थी। रुनझुन को अपनी उस गुड़िया से बहुत लगाव था। गुमसुम उदास बैठी रुनझुन अधिकतर गुड़िया को एकटक देखती हुई, मन ही मन उससे न जाने क्या बातें किया करती थी। वह गुड़िया से इतना प्यार करती थी कि उसे अपने पास बैठाकर भोजन करती थी और अपने साथ लेकर सोती थी। इतना ही नहीं, पढ़ाई करते समय भी वह गुड़िया के हाथों में पुस्तक थमाना नहीं भूलती थी, भूलती भी कैसे, वह कोई साधारण गुड़िया तो थी नहीं, उसकी पक्की दोस्त थीं। ऐसी दोस्त जिसके साथ वह खेलती थी तथा जिससे अपने मन की सारी बातें किया करती थी।

एक बार की बात है रुनझुन के नाना–नानी उनके घर आए हुए थे, उन्होंने अपनी बेटी–दामाद को रुनझुन के कारण तनाव में देखा। रुनझुन का अपनी गुड़िया के प्रति अत्यधिक लगाव देखकर, वे उसके भविष्य के प्रति चिंतित हो उठे। उसके खोए हुए बचपन को लौटाने के लिए तथा अपने साथ गाँव ले आए। ननिहाल में रुनझुन का हरपल, दिन और माह खुशी–खुशी बीतने लगा। गाँव के खुले परिवेश, गाय–भैंस, कुत्तों, बिल्ली तथा प्रकृति के बीच बच्चों के साथ खेलने, मौज–मस्ती करने तथा बिना मानसिक दबाव के विद्यालय जाने स रुनझुन का नटखट बचपन तो लौट आया, किन्तु नाना जी के अत्यधिक लाड़–प्यार तथा माता–पिता की दूरी ने उसे जिद्दी बना दिया।

रविवार का दिन था। हर बार की तरह इस बार भी रुनझुन के माता–पिता अपनी बिटिया के साथ समय बिताने के लिए दो तीन दिन की छुट्टी लेकर गाँव आए थे। उन्होंने सोचा, रविवार को रुनझुन की छुट्टी होगी, उसके साथ समय बिताएँगे, उसे घुमाने ले जाएँगे और उसके मनचाहे खिलौने दिलवाकर, उसकी सारी शिकायतें दूर कर देंगे। सुबह नाश्ता करने के बाद रुनझुन के पिता ने कहा– ''आज हम अपनी बिटिया को घुमाने ले जाएँगे... चलो जल्दी से तैयार हो जाओ।'' रुनझुन की माँ ने अपनी ब्रीफकेस खोला और उसकी नई फ्रॉक निकालकर, रुनझुन के कपड़े उतारने लगी। जैसे ही रुनझुन की माँ ने फ्रॉक उतारकर, उसे नई फ्राक पहनाई

तो वह दौड़ती हुई गई, अपनी गुड़िया उठाकर ले आई और अपनी माँ से गुड़िया को नई फ्रॉक पहनाने का आग्रह किया। जब रुनझुन की माँ ने उसे समझाने का प्रयास किया तो वह हाथ पैर पटकती हुई वहाँ से चली गई और जोर जोर से रोने लगी। रुनझुन के इस व्यवहार से खिन्न उसके माँ–बाबा को समझ ही नहीं आ रहा था कि वह इस तरह क्यों रो रही है।

रुनझुन के रोने की आवाज सुनकर, उसके नाना नानी और आसपास के लोग भी एकत्र होने लगे। सभी अपने अपने ढंग से उसे मनाने व समझाने की कोशिश करने लगे, लेकिन रुनझुन किसी की भी बात सुनने और समझने को तैयार ही नहीं थी। वह रोती हुई लगातार एक ही बात दोहराए जा रही थी, 'आज मेरी गुड़िया का जन्मदिन है। उसे नये कपड़े पहनाओ, आपने कहा था केक लेकर आएंगे... तब जन्मदिन मनाएंगे... आप मेरी गुड़िया के लिए कपड़े क्यों नहीं लायीं।' कहती हुई वह सिसक–सिसककर रोए जा रही थी। बेटी के मन में अपनी माँ के प्रति इतना गुस्सा देखकर रुनझुन के पिता ने उसकी माँ से पूछा, क्या तुमने इससे...''अपने पति की बात बीच में काटकर वह खीझकर बोली, आप ही बताइए, मैं क्या करती... फोन पर यह जिद कर रही थी... उस समय मैं ऑफिस में थी... ज्यादा बात तो कर नहीं सकती थी... इसे चुप कराने के लिए मैंने यूँ ही कर दिया था, ठीक है आपकी गुड़िया के लिए भी नये कपड़े लाएंगे? इस बात को लेकर रुनझुन के माता–पिता के बीच बहस शुरु हो गई। उन दोनों को लड़ते देख, रुनझुन सहमकर चुप हो गई और टुकुर–टुकुर उनकी ओर देखने लगी।

कुछ देर रुनझुन के नाना–नानी चुपचाप उन दोनों की बातें सुनते रहे, किन्तु अपनी बेटी–दामाद को एक–दूसरे पर दोषारोपण करते देखकर, नाना जी ने रुनझुन का हाथ पकड़ा और वहाँ से उठकर चले गए। उनके जाते ही एक–एक कर अन्य लोग भी जाने लगे। दोनों के बीच बहस बढ़ती देख नानी उठ खड़ी हुई और बीच–बचाव

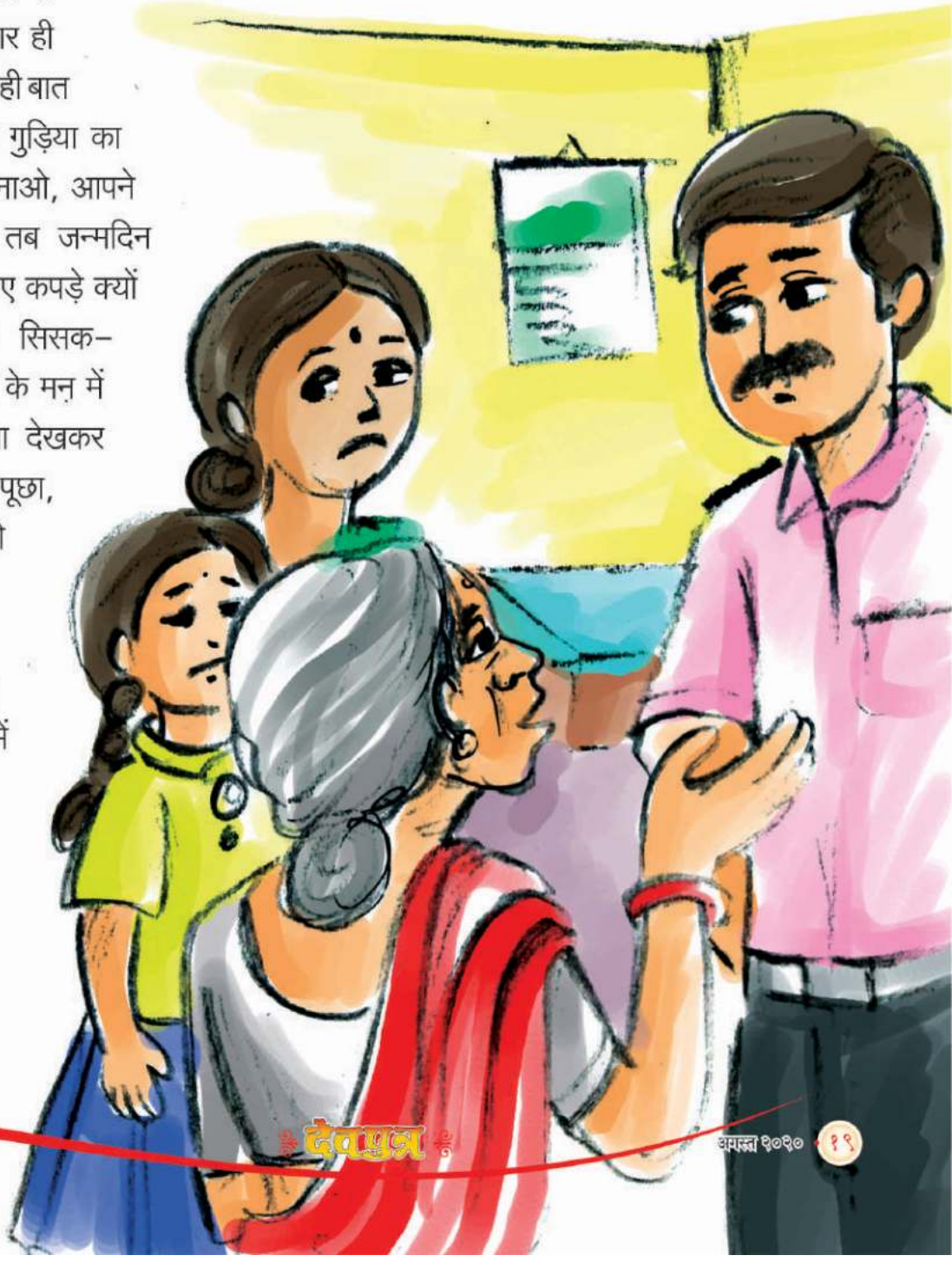

करते हुई बोली, ''बिटिया! क्रोध मूर्खता से शुरु होता है, और पश्चाताप पर समाप्त। इससे पहले कि तुम एक दूसरे के लिए विष उगलने लगो, दोनों मेरी बात ध्यान से सुनो। पहली बात, कार्यालय की व्यस्तता के बीच तुझे रुनझुन से बात ही नहीं करनी चाहिए थी। दूसरी बात यह है कि उसकी बेसिर-पैर की जिद पूरी करने के लिए, उसके आगे झुकना नहीं चाहिए था। तुम लोगों के इस व्यवहार से उसका स्वभाव इतना हठीला हो जाएगा कि भविष्य में जब कभी इसे किसी से अपनी कोई बात मनवानी होगी तो यह इसी तरह भावनात्मक दबाव डालकर अपनी बात मनवाने के लिए विवश किया करेगी और जिद पूरी न होने पर अपना और अपनों का मन खराब करती रहेगी।''

''माँ ! रुनझुन हमेशा ऐसा ही करती है।'' रुनझुन के पिता ने कहा।

''क्या तुम चाहते हो, वह ऐसा किया करें?'' रुनझुन की नानी ने उनसे पूछा।

''जिद्दी बच्चे किसे अच्छे लगते हैा, पर क्या करें... हम विवश हैं यह हमारी इकलौती संतान है... हम दानों इससे बहुत प्यार करते हैं... और हमेशा इसे खुश देखना चाहते हैं।'' रुनझुन की माँ उदास स्वर में बोली। रुनझुन की नानी को अपनी बेटी और दामाद की अज्ञानता पर दया आ रही थी। उन्होनें दोनों को बैठने का इशारा किया और उन्हें समझाते हुए बोलीं, ''क्या तुम चाहते हो कि भविष्य में तुम्हारी बेटी सभी की स्नेह पात्र बने... लोग उसके विनम्र स्वभाव की प्रशंसा करें... वह हर परिस्थिति में खुश रहना सीखे।''

''हम हमेशा इसे खुश ही देखना चाहते है... तभी तो इसकी हर एक बात मान लेते हैं, लेकिन यह दिन प्रतिदिन और भी जिद्दी बनती जा रही है... क्या करें... कुछ समझ नहीं आता।'' रुनझुन के पिताजी ने खीझते हुए कहा।

''क्या आप लोगों ने कभी माली को देखा है?'' रुनझुन की नानी ने प्रश्न किया।

''हाँ देखा हैं।'' दोनों एक साथ बोले।

''क्या करता है।'' उन्होंने अगला प्रश्न किया।

''पेड़-पौधों की देखभाल लेकिन आप हमसे यह सब क्यों पूछ रही हैं, हम आपको अपनी परेशानी के बारे में बता रहे हैं और आप...''

''मैं तुम्हारी परेशानी को जड़ से दूर करना चाहती हूँ, इसलिए मैंने यह प्रश्न किया। अब तुम दोनों सोचकर बताओं, माली क्या करता है।''

''वह पौधों को सींचता है उनके आस-पास की घास, खर-पतवार उखाड़ता है... आवश्यकता अनुसार खाद पानी डालता है और... और... कीटनाशक का छिड़काव करता... बेतरतीब बढ़ती बेलों तथा पेड़-पौधों की काट-छाँट भी करता हैं।'' बोलते-बोलते जब रुनझुन की माँ अटक गई तो उसके पिता ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

नानी मुस्कराती हुई बोली, तुम्हें भी माली की तरह रुनझुन का ध्यान रखना चाहिए।

माली की तरह... मतलब?

मतलब यह की रुनझुन के संगी साथी कौन हैं वह उसके विकास में बाधा तो नहीं बन रहें हैं रुनझुन को उचित पोषण मिल रहा है या नहीं... उसकी माँग अनावश्यक या अनुचित तो नहीं है... और सबसे जरूरी हैं, उसके मन को समझने का प्रयास करना। यह तभी संभव है जब तुम रुनझुन के साथ समय व्यतीत करोगे। एक कुशल माली अपने उपवन के प्रत्येक पौधे के स्वभाव और उसकी आवश्यकता को समझकर ही उसकी देखभाल करता हैं।'' रुनझुन की माँ मुस्कुराती हुई उठी और माँ से लिपट गई, उसे समस्या का समाधान मिल गया था।

● **हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)**

लम्बे कद का फायदा

चित्रकथा
देवांशु वत्स

देशों के परिवर्तित नाम

आलेख

श्रीधर बर्वे

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थिति अथवा अन्य कारणों से कुछ देशों ने अपने नाम में परिवर्तन किया है। सम्बन्धित देश के समाचार और आवश्यकतानुसार उनकी पृष्ठभूमि जानने की दृष्टि से पुराने और नये नाम की जानकारी की आवश्यकता होती है –

पुराना नाम	नया नाम	पुराना नाम	नया नाम
सिलोन	श्रीलंका	दहोमे	बेनिन
बर्मा	म्यांमार	डच ग्याना	सूरीनाम
स्याम	थाईलैण्ड	ब्रिटिश गयाना	गयाना
शाम	सीरिया	तांगान्यिका	तांजानिया (संयुक्तनाम)
पूर्वी पाकिस्तान	बांग्लादेश	जंजीबार	तांजानिया (संयुक्तनाम)
ब्रिटिश होंडूरास	बेलिज	फारमोसा	ताईवान
बसुटोलैण्ड	लेसोथो	फारस	ईरान
एबीसिनिया	इथियोपिया	एलिस द्वीप समूह	तुवालू
उत्तरी रोडेसिया	जैम्बिया	न्यू हेब्रिडिस द्वीप समूह	वनुआतू
दक्षिणी रोडेसिया	जिम्बाबवे	गिलबर्ट द्वीप समूह	किरीबाती
दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका	नामीबिया	मलावी	न्यासालैण्ड
बेचुआनालैण्ड	बोत्सवाना	गडेल्डकोस्ट	घाना
अपर वोल्टा	बुरकिनाफासो	कैरोलिन द्वीप समूह	माइक्रोनेसिया
		टोगोलैण्ड	टोगो

विशेष –

वर्ष १९९१ के आरम्भ तथा बाद के कुछ वर्षों में सोवियत संघ और युगोस्लाविया के विघटन के फलस्वरूप अनेक नये देशों का उदय हुआ।

सोवियत संघ के विघटन से निम्नांकित देशों ने विश्व मानचित्र पर स्थान पाया–

देश	राजधानी	भौगोलिक स्थिति
रुस–परिसंघ	मास्को	योरोप– उत्तरी एशिया
यूक्रेन	कीव	पूर्वी योरोप
बोलारुस	मिन्स्क	पूर्वी योरोप
मोल्दोवा	चिसिनाऊ	पूर्वी योरोप

एस्टोनिया	ताल्लिन	बाल्टिक सागर तट
लिथुआनिया	विलनियास (बिल्ना)	बाल्टिक सागर तट
लेटविया	रिगा	बाल्टिक सागर तट
कजाखस्तान	अस्ताना (अकमोला)	मध्य एशिया
किरगिजस्तान	बिशकेक	मध्य एशिया
ताजिकिस्तान	दुशानबे	मध्य एशिया
तुर्कमेनिस्तान	अश्खाबाद	मध्य एशिया
उज्बेकिस्तान	ताशकन्द	मध्य एशिया
अजरबैजान	बाकू	(रुसी परिसंघ के दक्षिण में कॉकेशस
आरमीनिया	येरेवान	पर्वत की गोद में तथा कैस्पियन
जॉर्जिया	तिबलिसी	सागर तट पर)

दक्षिणी योरोप के देश युगोस्लाविया के बिखराव से निम्नांकित ७ नये देश उदित हुए–

देश का नाम	**राजधानी**
क्रोएशिया	जगरेब
मेसीडोनिया	स्कोप्ये
मोन्टेनिग्रो	पोजोटिका, केतिन्ये
सर्बिया	बेलग्रेड
स्लोवेनिया	ल्यूबल्याना
कोसोवो	प्रिस्टिना
बोस्निया–हर्जेगोविना	सारायेवो

सोवियत संघ, युगोस्लाविया के अलावा मध्य योरोप का देश चेकोस्लोवाकिया भी १९९२ में दो पृथक स्वतंत्र देशों में विभक्त हो गया है

देश	**राजधानी**
चेक गणराज्य	प्राग
स्लोवाकिया	ब्रातिस्लावा

स्लोवाकिया देश योरोप महाद्वीप का हृदय स्थल (मध्य भाग) है।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति (१९१८) पर पश्चिम एशिया का देश फलस्तीन (पैलेस्टाइन) मेंडेट क्षेत्र के रूप में ब्रिटेन के अधिपत्य में आया। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति और द्वितीय महायुद्ध की मध्य अवधि में बड़ी संख्या में यहुदीजन फलस्तीन में आकर बसते गये। जर्मनी सहित कई देशों में इस जनगण पर भयानक अत्याचार किये गये। जर्मनी के नात्सी राज्य में लाखों यहुदियों को मौत के घाट उतारा गया।

१४ मई १९४८ को अंग्रेजों ने स्वतंत्र करते समय फलस्तीन का विभाजन कर इजरायल का निर्माण किया। इजरायल के निर्माण के लिए जायनवाद के झण्डे तले पिछले कई दशकों से आन्दोलन चल रहा था। इजरायल की राजधानी यरुशलेम है।

इजयराल के निर्माण के बाद फलस्तीन के शेष भाग में इसी नामका (फलस्तीन) देश विधिवत एक राज्य के रूप में आने के लिए संघर्षरत है। फिलहाल फलस्तीन दो खण्डों में विभक्त है। एक भाग जोर्डन नदी के पश्चिमी तट पर तथा गाजा पट्टी के नाम से भूमध्य सागर के पूर्वी तट पर स्थित है।

भारत में नाम परिवर्तन–

पूर्व नाम	वर्तमान नाम
बम्बई, बॉम्बे	मुम्बई
कलकत्ता	कोलकाता
मद्रास	चेन्नई
बैंगलोर	बेंगलुरु
मैसूर	मैसुरु
गुड़गाँव	गुरुग्राम
त्रिवेन्द्रम	तिरुवनन्तपुरम
गौहाटी	गुवाहाटी
बड़ौदा	वड़ोदरा
पंजिम	पणजी

नाम परिवर्तित राज्य

पूर्व नाम	वर्तमान नाम
मद्रास	तमिलनाडु
मैसूर	कर्नाटक
उड़ीसा	ओडिसा
पांडीचेरी	पुडुच्चेरी
नेफा	अरूणाचल प्रदेश

● इन्दौर (म.प्र.)

मेडल की जिद

कहानी

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

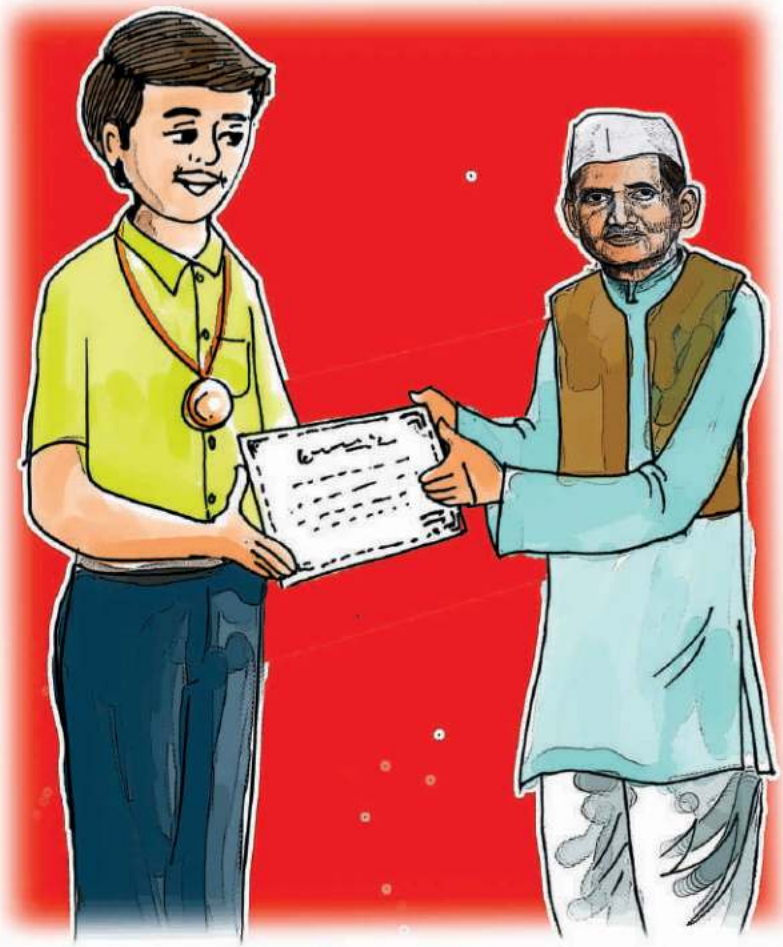

लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासनिक अकादमी मसूरी, जहाँ आईएएस अधिकारी को प्रशिक्षण दिया जाता हैं। समर्थ देश की सबसे बड़ी अधिकारी की परीक्षा पास कर आईएएस के रूप में चयनित होकर एक साल से प्रशिक्षण ले रहा था। आज प्रशिक्षण समाप्त हो रहा था। प्रशिक्षण अकादमी के हाल में सभी आईएएस परिक्षार्थियों के लिए कार्यक्रम आयोजित किया था जिसमें सभी के माता पिता भी आए हुए थे। इस कार्यक्रम में समर्थ के पिताजी राजशेखर जी व उसकी माता जी भी आई थी। राजशेखर जी के आँखों से आँसू बहने लगे जब प्रशिक्षण हाल में सर्वश्रेष्ठ आईएएस प्रशिक्षार्थी के रूप में समर्थ का नाम पुकारा गया और राज्यपाल महोदय के द्वारा मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जा रहा था। पूरा सभागृह खचाखच भरा हुआ था। आईएएस प्रशिक्षुओं के माता–पिता आए हुए थे। इतने लोगों के बीच समर्थ का मेडल पाना बहुत गौरवान्वित करने वाला था। समर्थ के पिता ने कभी नहीं सोचा था कि उनका बेटा इतना बदल जाएगा और इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल कर लेगा। समर्थ के पिताजी लगभग दस वर्ष पीछे पुरानी यादों में चले गए, उस समय की बात परत दर परत सोचने लगे। दरअसल समर्थ के आईएएस बनने की कहानी बहुत ही दिलचस्प है। जो छात्र बमुश्किल कक्षा में पास होता था, पढ़ने में बहुत ही कमजोर था। आश्चर्य है कि उसने देश की सबसे बड़ी परीक्षा पास कर प्रशिक्षण में सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी के रूप में प्रशिक्षण समाप्त कर जल्द ही कलेक्टर के रूप में अपनी सेवा देगा।

उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के चंबा गाँव के राजशेखर इंटर कॉलेज में एक अध्यापक थे। उसी विद्यालय में उनका इकलौटा बेटा समर्थ भी कक्षा आठ में पढ़ता था। समर्थ शुरु से पढ़ने लिखने में बहुत ही फिसड्डी था। किसी तरह सातवीं तक पास हुआ था। इकलौता होने के कारण घर में माँ दादा–दादी का लाड़ दुलार कुछ ज्यादा ही हो गया था। जिसके कारण समर्थ बिगड़ गया था। जिद्दी तो एक नंबर का था। जिस बात की जिद कर लेता था वह करके ही रहता था। समर्थ के पिता के न चाहते हुए भी घर वालों से वह पूरी शह पाता था। उसके पिताजी जब भी डाँटते व मारने को दौड़ते तब समर्थ के दादा–दादी उसे बचा लेते। समर्थ को बिगाड़ने में उसकी माँ का पूरा योगदान था। उसकी हर गलत मांग को पूरा कर देती थी। समर्थ विद्यालय में सबसे पीछे बैठता था साथ ही लड़ाई झगड़ा भी करता रहता था। समर्थ के पिता उसे हमेशा समझाते थे कि बेटा तुम शिक्षक के बेटे हो, कुछ लायक बनो, पर समर्थ के ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता था। उस वर्ष रायबरेली जिले के सभी इंटर कॉलेज के

कक्षा छः से बारह तक के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों का सम्मान समारोह जिलाधिकारी द्वारा आयोजित किया गया। समर्थ के विद्यालय के भी कुछ बच्चों को सम्मान के लिए नाम था। समर्थ भी उस समारोह में अपने पिताजी के साथ गया, हालाँकि वह जाना नहीं चाहता था पर पिताजी के कहने पर चला गया। सम्मान समारोह में जब उसके विद्यालय के बच्चों को मेडल दिया जा रहा था, समर्थ को बच्चों के हाथ में मेडल जिलाधिकारी से लेना बहुत अच्छा लगा, लोग ताली बजा रहे थे, उसने मन में सोचा मुझे भी मेडल चाहिए, ऐसा समारोह समर्थ ने कभी नहीं देखा था। समर्थ ने अपने पिताजी से कहा, कि पिताजी मुझे भी मेडल दिलवा दो। उसके पिता ने हँसते हुए कहा, कि तुम्हें मेडल चाहिए... अरे बेटा! मेडल उसे मिलता है जो खूब परिश्रम से पढ़ता है। तुम तो एक दम नक्कारा हो। नहीं, पिताजी मुझे मेडल लेना है। समर्थ के पिताजी डाँटते हुए बोले भाग जाओ यहाँ से नहीं तो... माँ के दुलारे हो, पढ़ना लिखना है नहीं और चाहिए मेडल। समर्थ सोचने लगा, वह जिद्दी तो था ही। अच्छा... पिताजी मैं माफी माँगता हूँ यदि मैं पढ़ने लगूँ तो आप मुझे मेडल दिलांएगे। राजशेखर ने कहा, हाँ यदि पढ़ने लगे तो तुम्हें जरूर मेडल मिलेगा, एक नहीं कई मेडल मिलेंगे। उसी दिन से समर्थ ने मेडल पाने की जिद ठान ली, जिसके लिए समर्थ खूब मेहनत से पढ़ने लगा। लड़ाई झगड़ा भी छोड़ दिया, अपने पिताजी की बात मानने लगा। हर कक्षा में टॉप करने लगा, कई बार टॉप करने के लिए मेडल प्राप्त किए और तैयारी कर आईएएस की परीक्षा पास की और आज सर्वश्रेष्ठ प्रशिक्षार्थी का उसे बड़ा मेडल मिला। उसके पिताजी फूले नहीं समा रहे थे। समर्थ मेडल लेकर दौड़ा हुआ आया अपने पिताजी व माता जी के पैर छूते हुए बोला, पिताजी उस दिन आप मुझे उस सम्मान समारोह में न ले गए होते तो मैंने आज इतना बड़ा मेडल न पाया होता। बेटा मेरे वहाँ ले जाने की वहज से तुम्हें मेडल नहीं मिला। बल्कि मेडल पाने की जिद्द या कहें दृढ़ संकल्प से तुमने यह करके दिखाया है। यदि किसी कार्य को करने के लिए कोई भी जिद कर ले और पूर्ण समर्पण व निष्ठा लगन से हम करें तो कुछ भी असंभव नहीं है, समर्थ को समझाते हुए राजशेखर ने कहा।

● **कैतहा (उ.प्र.)**

आपकी पाती

– विजय जी. वलेरा (खत्री), डीसा (गुजरात)

मेरा नाम विजय कुमार है। शिक्षक की नौकरी है। इसीलिए साहित्य से लगाव बढ़ता ही गया। गुजराती में काफी समय से लिखता आ रहा हूँ। बाद में हिन्दी में भी लिखना शुरु किया।

देवपुत्र के परिचय में दो साल पहले आया। इंटरनेट पर देवपुत्र क्यों? लेख में देवपुत्र का महत्व पढ़ा। देवपुत्र के कई अंक देखे पढ़े। सचमुच लगा कि देवपुत्र गुणवत्तायुक्त श्रेष्ठ बाल सामयिकों में से एक है।

देवपुत्र बच्चों को वह सामग्री नहीं देता जो वह चाहते हैं बल्कि वह सामग्री देता है जो उनके लिए महत्वपूर्ण हो– यह वाक्य दिल दिमाग को छू गया।

देवपुत्र की यह साहित्य यात्रा सफलतापूर्वक आगे बढ़ते ही रहे। पाठक देवपुत्र को ज्यादा से ज्यादा पढ़ते रहें ऐसी शुभकामनाएँ।

झूठ की आग

कहानी

सत्यनारायण भटनागर

आज श्लोक आनंद में था। सुबह की ठंडी हवा में उड़ता हुआ वह साईकल पर चल दिया। उसने कंधे पर बस्ता लटका लिया था। होमवर्क उसने कर लिया था इसलिए उसे चिंता नहीं थी। बस्ते में सब पुस्तकें व्यवस्थित थी। वह सोच रहा था– आज पुस्तकालय से पुस्तकें इश्यू कराएगा। वह सोचते अपनी शाला में प्रवेश किया। वह सोचते–सोचते अपनी शाला के दरवाजे आ गया। उसने साईकल रोकी और दरवाजे से शाला में प्रवेश कर गया। शाला के मुख्य दरवाजे के दांए हाथ पर बगीचा था। बगीचे में सुन्दर सुन्दर पुष्प खिले थे तो बड़े बड़े वृक्ष भी थे। कोयल कूक रही थी। जेसे ही वह बगीचे के पास आया– एक आवाज आई ''श्लोक इधर आओ।''

श्लोक ने देखा, बगीचे के अंदर आम के वृक्ष पर उसका मित्र पुष्पेन्द्र बैठा है। वह बगीचे के अंदर चला गया। वहाँ उसे मोक्ष, हेमेन्द्र, पार्थ, राजेश आदि बैठे दिखे। सबने एक स्वर में उसका स्वागत किया– ''आओ, आओ पढ़ाकू! तुम्हारा स्वागत है'' सब हँस दिए। श्लोक बस्ता पीठ पर लादे, उनमें जा बैठा। उसने पूछा– ''क्या बात है? आज कक्षा में नहीं जाना क्या?''

मोक्ष ने कहा– ''बेटा! आज कक्षा में जाने का मन नहीं है। क्या, रोज–रोज कक्षा में बैठना, वही पाठ, वही मास्टर जी, वही कक्षा उबाई नहीं लगती। कुछ बदलाव होना चाहिए। कुछ हँसी मजाक, कुछ खान–पान, कुछ सैर सपाटे को तेरा मन नहीं करता पढ़ाकू! चलो आज तुम भी हमारे साथ आनंद लो।''

मोक्ष ने कहा तो पार्थ, हेमेन्द्र सभी हँस दिए। पार्थ ने कहा–''यह पढ़ाकू तुम्हारे कहने में नहीं आएगा।'' इसकी जान तो पुस्तकों के ढेर में है। ये एक नम्बर का डरपोक है।''

हेमेन्द्र बोला– ''नहीं, भाई! तुम श्लोक को गलत समझ रहे हो, वह डरपोक नहीं है। उसे किसका डर है। जब कक्षा में कोई नहीं जाएगा तो यह बेचारा वहाँ अकेला क्या पढ़ेगा? मास्टर जी इस अकेले को पढ़ाने से तो रहे। यह अकेला मूर्ख बनेगा, इसलिए यह हमारे साथ है। आज देखना यह हम सबका नेतृत्व करेगा। क्यों श्लोक?''

श्लोक आज घिर गया था। सभी तो उसकी कक्षा के साथी है। उसे लोग ठीक कहते हैं
ये एक दिन मौज मस्ती
में गुजर जाने से
क ा े इ

आसमान नहीं फट जाएगा। वहा बोला– ''आप सबकी राय मेरी राय। बोलो ''कहाँ चलना है?'' यह सुनते ही पुष्पेन्द्र कूद पड़ा वृक्ष से। बोला– ''यह हुई कुछ बात। आज चलते हैं मैटनी शो में। नई फिल्म लगी है। ठीक पाँच बजे तक घर पहुँच जाएंगें। किसी को पता ही नहीं चलेगा। आज की दोपहर आनन्द के नाम।''

बगीचा हँसी से गूंज उठा। मोक्ष ने कहा– ''फिर उठो। पैसे इकट्ठे करो। टिकिट ले लेते हैं।''

सबने अपने जेब से पैसे निकाले। मोक्ष को दे दिए। मोक्ष बढ़ गया सिनेमा घर की तरफ। सब पीछे चल दिए। सिनेमा घर पास ही था। खूब चहल पहल थी। सिनेमाघर के बाहर फोटो लगे थे। सब उन्हें देखने लगे। टिप्पणी– हँसी, ठिठोली चलती रही। फिर सब सिनेमा हाल में फिल्म देखने चले गए।

सिनेमा मजेदार थी। हँसी से भरपूर। सब अपने अपने घर के लिए विदा लेकर चल दिए। श्लोक भी अपना बस्ता लादे घर की ओर चल दिया। घर पहुँचते ही उसका सामना माँ से होता है। माँ पूछती है – ''आज क्या हुआ विद्यालय में? कैसा रहा दिन? आज क्या जवाब देगा वह। वह कई बातें सोच गया। उसे लगा माँ झूठ पकड़ लेगी। माँ के आगे झूठ चल ही नहीं सकता। पता नहीं कैसे वही हावभाव पकड़ लेती है। खोदकर प्रश्न करती है। जब तक माँ संतुष्ट नहीं होती प्रश्न पूछती रहती है। श्लोक ने तय किया कि वह कह देगा आज पढ़ाई हुई नहीं। विद्यालय में क्रिकेट मैच चल रहा था। सब वहीं देखते रहे।''

घर आ गया। श्लोक ने बस्ता बिस्तर पर फैंका। गणवेश उतारी और बाथरूम में चला गया। माँ घर पर नहीं थी। पड़ोस में गई थी। उसने राहत की सांस ली। चलो भगवान ने बचा लिया। वह शयन कक्ष में गया। वहाँ बहन मीनाक्षी टी.वी. देख रही थी। वह भी वही बैठ गया। टी.वी. देखते देखते भी उसका मन उलझा था। माँ ने पूछा तो क्या होगा? क्या जवाब देगा? कैसे देगा? वह जवाब बनाता, दोहराता, मन को पक्का कर रहा था। जरा भी गड़बड़ाया कि झूठ पकड़ा जाएगा।

वह सोच में डूबा था कि उसे अपने पिताजी की आवाज सुनाई दी। वे आ गए थे। वह दौड़ बैठक में गया। उसने देखा–

माँ भी घर में प्रवेश कर रही थी। पिताजी सोफे पर बैठें थे। उसे लगा– पिताजी आज कुछ गम्भीर लग रहे थे। पिताजी ने उसे देखा और पूछा– ''कैसा रहा दिन? विद्यालय में क्या किया?''

श्लोक ने बिना विलम्ब किए अपना बना बनाया उत्तर बिना किसी झिझक के सुना दिया। ''आज दिनभर क्रिकेट मैच हुआ। पढ़ाई नहीं हुई।''

पिताजी ने सुना। वे क्रोध से लाल हो गए। उठे और एक जोरदार तमाचा श्लोक के गाल पर तड़ाक से पड़ा। बोले– ''झूठ बोलते हो?''

''कहाँ से सीखा झूठ बोलना?''

''श्लोक दहाड़ मार चीखा। माँ के पास भागा। माँ से लिपट कर बोला– ''माँ पिताजी ने मारा।'' उसे आज पहली बार तमाचा पड़ा था। उसने पिता का गुस्सा देखा तो घबरा गया। माँ ने कहा– ''बेटा! तुम झूठ बोले होंगे। पिताजी ने तुम्हारा झूठ पकड़ लिया होगा। तुम सच बताओ, सच क्या हैं?''

श्लोक रोते रोते बोला– ''आज कक्षा के सब लड़के सिनेमा गए थे। मैं भी उनके साथ गया था।''

पिताजी बोले– मुझे कार्यालय में पता चल गया था। शर्मा जी ने उसे वहाँ देखा था। उन्होनें मुझे बताया फिर पिताजी दो क्षण रुके। बोले– ''श्लोक बताओ तुम्हे चपत क्यों पड़ी?''

श्लोक रोते रोते बोला– ''इसलिए कि मैं सिनेमा देखने गया था। पिताजी ने कहा– ''नहीं, इसलिए नहीं, बचपन में सब कभी न कभी मोज मस्ती के लिए विद्यालय छोड़ते हैं। हमने भी कभी ऐसा किया था।''

श्लोक आश्चर्य से डूब गया। उसका रोना बंद हो गया था। उसने डरते डरते पूछा– ''फिर क्यों मारा

यह देश है वीर जवानों का (९)

कंपनी क्वार्टर
मास्टर अब्दुल हमीद

किसी को भी यह सुनकर आश्चर्य ही होगा कि क्या केवल बन्दूक के सहारे युद्ध में पैटन टैंक भी नष्ट हो सकते हैं? लेकिन ऐसा हुआ है और यह अद्‌भुत, अकल्पनीय शौर्य दिखाया था अब्दुल हमीद ने। कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद ने अपने अद्‌भुत साहस से सिद्ध कर दिया कि साहस से बड़ा कोई शस्त्र नहीं होता। १ जुलाई १९३३ को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के धामुपुर ग्राम में एक अत्यंत निर्धन परिवार में जन्मा यह भारत वीर साहस से कितना धनी था यह तब ज्ञात हुआ जब भारतीय सेना की ग्रेनेडियर्स इन्फैंट्री रेजीमेंट में सिपाही से हवलदार के रूप में पदोन्नत होकर उन्होंने १९६५ के भारत पाक युद्ध में अपना सैन्य कर्त्तव्य निभाया।

स्थान था पंजाब के तरनतारन का खेमकरण सेक्टर जहाँ सेना की अग्रिम पंक्ति में सम्मिलित थे अब्दुल हमीद। ८ सितम्बर की अंधेरी ठण्डी रात में खेमकरण के उतार गाँव पर अमेरिकी पैंटन टैंकों के साथ पाकिस्तान टूट पड़ा था। हमारा शस्त्र बल अपर्याप्त था, थ्री नाट थ्री रायफल और एल. एम. जी. लेकर हमारे योद्धा दुश्मन के टैंकों से जा भिड़े थे।

अब्दुल हमीद के पास गन माउनटेड जीप थी लेकिन साहस कब साधनों का बहाना खोजता हैं। टैंक के सामने जीप हाथी के सामने खरगोश जैसी थी पर अब्दुल हमीद ने खरगोश सी की चपलता से उसे एक टीले की आड़ में खड़ा था अपनी बन्दूक से पैंटन टैंकों के कमजोर हिस्सों पर ऐसा सटीक निशाना साधा कि देखते ही देखते सात टैंक नष्ट हो गए। पाकिस्तानी कमाण्डर बौखला कर अब्दुल हमीद को घेरे चारों ओर से गोलावृष्टि करने लगे। दुर्भाग्य से एक गोला उनकी जीप पर गिर कर अनहोनी कर गया। जीप ध्वस्त हुई और अगले दिन ९ सितम्बर को इस वीर सपूत ने दम तोड़ दिया। देश ने उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित कर अपनी कृतज्ञता अर्पित की।

आपने?''

पिताजी ने हँसते हुए कहा– ''तुमने झूठ बोला। तुम्हें सच सच बताना था कि तुम सिनेमा गए थे। तुम सच बोलते तो हम प्रसन्न होते। तुम्हें समझाते। पर झूठ बोल कर तुम हमारा विश्वास खो बैठे'' पिताजी उठकर वहाँ से चले गए।

श्लोक कुछ समझ न पाया। उसने माँ से पूछा– पिताजी ने कहा– ''तुम हमारा विश्वास खो बैठे, इसका क्या अर्थ है माँ।''

माँ ने कहा– ''बेटे! सच बोलने वाले पर विश्वास किया जाता है। तो झूठ बोलता है उस पर कोई विश्वास नहीं करता। वह सच बोलता है तब भी उसकी जाँच की जाती है। जब हम किसी के विश्वास के पात्र नहीं रहते तब हमें बहुत हानि होती है। झूठ बोलना खतरनाक है। साँप के विष की तरह है। आगे से तुम कभी झूठ मत बोलना। झूठ कभी न कभी पकड़ा जाता है। झूठ बोलने वाले पर कोई विश्वास नहीं करता।''

श्लोक अब गंभीर हो गया। उसे लगा झूठ बोलकर उसने सचमुच विश्वास खो दिया है। अब वह कभी झूठ नहीं बोलेगा।'' इस विचार के आते ही वह अपने को हल्का अनुभव करने लगा।

● इन्दौर (म.प्र.)

आओ सारे साथी आओ

कविता

पवन पहाड़िया

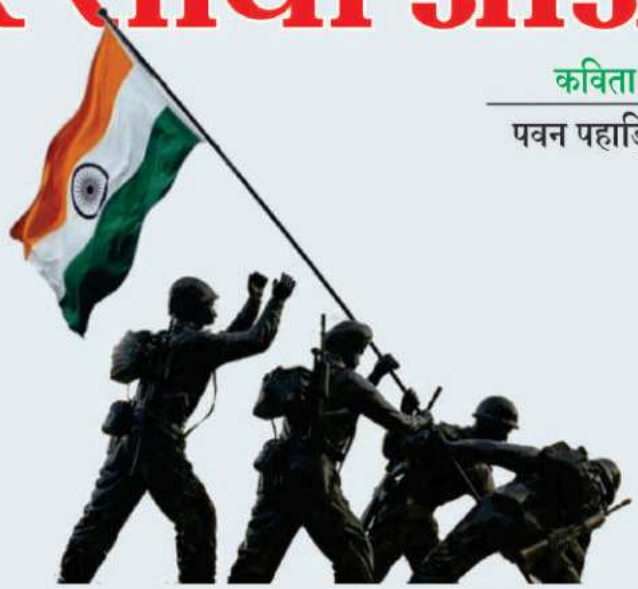

स्वतंत्रता का पर्व मनाओ
आओ सारे साथी आओ।

यह धरती है अपनी माता
इस पर हमने जन्म लिया है
इसने हमको बड़ा बनाने
अपना सहयोग दिया है
इसकी रक्षा हमको करनी
लिया हुआ मिल वचन निभाओ
आओ सारे साथी आओ।

हम बेटों के होते कोई
कैसे आँख दिखा सकता है
उस मुँह को बंद हमें कराना
जो जी में आए बकता है
जैसे के संग तैसा करके
शीश काट उन सब का लाओ
आओ सारे साथी आओ।

हम नहीं डरते नहीं डरेंगें
मार गिराएगें दुश्मन को
रहे तिरंगा लहराता इस
हेतु अर्पित तन मन धन को
सकल विश्व के गुरू बने हम
दिल से इसकी शपथ उठाओ।

मुँह में राम बगल में छुरी
वालों को नहीं छलनें देंगे
बहुत छला पहले धोखे से
दांव नहीं यह चलने देंगे
काला मुँह उनका करने को
सीमाओं पर सब डट जाओ
आओ सारे साथी आओ

● डेह (राज.)

● डेह (राज.)

वरदान या अभिशाप

कहानी

रामलखन प्रजापति 'प्रतापगढ़ी'

पायल और प्रतीक दोनों भाई बहन थे। पायल कक्षा दस में पढ़ती थी जबकि प्रतीक कक्षा आठ का विद्यार्थी था। दोनों पढ़ने में अच्छे थे। पायल को पुस्तकों से बड़ा प्रेम था। वह उन्हें संजोकर रखती और पढ़कर ढेर सारी जानकारियाँ प्राप्त करती। उसे पत्र–पत्रिकाएँ भी पढ़ने का शौक था। प्रतीक किताबों की अपेक्षा मोबाइल फोन से पढ़ाई करता। वह पढ़ाई के बहाने यू ट्यूब, व्हाट्स एप्प तथा फेसबुक भी चलाया करता था। कभी–कभी वह गेम भी खेलने से नहीं चूकता था।

एक दिन जब पायल और प्रतीक अपने अध्ययन कक्ष में पढ़ने बैठे तो प्रतीक ने मोबाइल फोन चला दिया। पायल का ध्यान पढ़ाई से बंट गया। वह प्रतीक से बोली– ''विद्यार्थियों के लिए मोबाइल फोन चलाना अच्छी बात नहीं होती। तुम इसमें अपना समय बरबाद मत करो। किबाबों से पढ़ाई करो।''

पायल की बात प्रतीक को न जंची। वह बोला–''दीदी! अब हम लोग इक्कीसवीं सदी में रह रहें है। यह वैज्ञानिक युग है। इस जमाने में यदि हम वैज्ञानिक यंत्रों का प्रयोग नहीं करेंगे तो पिछड़ जायेंगे। हमें समय के साथ चलना चाहिए।''

''मोबाइल फोन बड़ों के लिए है बच्चों के लिए नहीं। इसे बहुत देर तक देखने से बच्चों की आँखें कमजोर हो जाती हैं।'' पायल ने प्रतीक को समझाते हुए कहा।

प्रतीक ने फिर तर्क दिया, ''मोबाइल फोन के प्रयोग से बच्चों में स्मार्टनेस आती है। उनका दिमाग तेज होता है। इसमें गेम खेलने से तुरंत निर्णय लेने की क्षमता आती है।''

प्रतीक की बातों पर पायल को हँसी आ गई उसने कहा, ''मोाबइल पर गेम खेलना कोई स्मार्टनेस नहीं है। यह तो केवल समय की बरबादी हैं। यदि खेलना ही है तो खेल के मैदान में खेलो। इससे तुम्हारी सेहत भी ठीक रहेगी।''

''मगर दीदी! मोबाइल फोन में सर्च करने से हमें बहुत सी जानकारियाँ मिलती हैं। यू–ट्यूब से पढ़ाई भी कर

सकते हैं। घर बैठे–बैठे दूर के लोगों से भी बात कर सकते हैं।'' प्रतीक ने फिर अपना तर्क दिया।

पायल ने फिर कहा, ''असली ज्ञान तो हमें पुस्तकों एवं पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त होता है। इन्हें पढ़ने से हमारी आँखें भी सुरक्षित रहती है। समय भी बरबाद नहीं होता। खुद में सृजनशीलता आती है। अधिक मोबाइल फोन चलाना एक प्रकार का व्यसन है।''

प्रतीक और पायल की बहस बढ़ती ही जा रही थी। वे एक दूसरे की बात मानने को तैयार नहीं थे। तभी वहाँ दादाजी आ गये। वे अपने कमरे में लेटे–लेटे पायल और प्रतीक की सारी बातें सुन रहे थे। उन्होंने कहा, ''देखो बच्चो! तुम दोनों अपनी–अपनी जगह पर ठीक हो। विज्ञान द्वारा हमें प्रदान की गयीं वस्तुएँ न तो पूर्णरूप से लाभकारी है और न ही हानिकारक। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उनका उपयोग किस तरह से करते हैं।''

''भला वो कैसे दादाजी? एक ही वस्तु कैसे लाभदायक भी हो सकती और हानिकारक भी?''

प्रतीक का प्रश्न सुनकर दादाजी मुस्कराने लगे। वे उदाहरण देते हुए बोले, ''बन्दूक एक वैज्ञानिक आविष्कार है। इसका प्रयोग हम अपनी रक्षा के लिए करते हैं किन्तु कुछ लोग इससे आत्महत्या भी कर लेते है। यदि किसी भी वस्तु का प्रयोग हम समझदारी से करेंगे तो वह लाभकारी होगा। इसके विपरीत यदि उसका प्रयोग हम मूर्खतापूर्वक करेंगे तो वह हमें हानि पहुँचाएगी। यही बात मोबाइल फोन पर भी लागू होती है। हमें इसका प्रयोग जरूरत पर ही करना चाहिए। जरूरत पूरी होने के बाद इसे रख देना ही अच्छा होता है। जहाँ तक पढ़ाई की बात है तो मोबाइल फोन किताबों का स्थान कभी नहीं ले सकता है। स्थायी और विश्वसनीय ज्ञान तो पुस्तकों से ही मिलता है। मोबाइल फोन हमें उतनी ही देर चलाना चाहिए जितने से अन्य कार्य बाधित न हो। कुल मिलाकर बच्चों मैं यह कहना चाहता हूँ कि यदि हम इसका प्रयोग समझदारी के करते हैं तो यह वरदान है नहीं तो अभिशाप।

● **जसरा, प्रयागराज (उ.प्र.)**

बड़े लोगो के हास्य प्रसंग

सरदार पटेल

बारडोली सत्याग्रह की बात है। गाँव– गाँव में सरदार पटेल का हुक्म चलता था। कुर्की और अन्य अत्याचार करने वाले सरकारी अधिकारियों के आगमन की पूर्व सूचना देने के लिए प्रत्येक गाँव में ढोल नगाड़ों का प्रबंध था। उनकी ध्वनि होते ही पुरुष गाँव दौड जाते, स्त्रियां घरों में रहती । चारों ओर सुनसान हो जाता। बालोड़ में सरदार थाने के पास भाषण दे रहे थे। अचानक कुर्क की हुई भैंस ने थाने में रेंकना प्रारम्भ कर दिया। सरदार ने झट कहा, ''सुनो, ये भैंस क्या कहती है? 'रिपोर्टर' लिख लें कि, बालोड़ के थाने में भैंसें भी अंग्रेजी राज को कोस रही हैं।''

पं. मोतीलाल नेहरू

पंडित मोतीलाल नेहरू इंग्लैण्ड जाने के लिए एक जहाज से यात्रा कर रहे थे। उसी जहाज से हैदराबाद के एक नवाब भी यात्रा कर रहे थे। पंडित का और नवाब साहब का आपस में खूब मजाक चल रहा था। इसी मजाक के बीच नबाव साहब ने एक दिन पंडित जी से पूछा, ''क्यों पंडितजी, क्या आप गौ मांस भी खा लेते हैं?'' पंडित जी ने तुरंत जबाव दिया, ''गौ मांस तो नहीं खाता, लेकिन यदि गौ–माँस–भक्षक का माँस मिल जाए तो मसाला मिलाकर बड़े मजे से खाऊँ।''

बनाओ सजाओ

कागज का मेंढक

• राजेश गुजर

(१)

कागज का मेंढक बनाने के लिए एक आयताकार कागज लें.

(२)

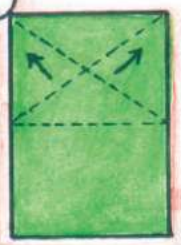

इस कागज को चित्र के अनुसार आधा मोड़ लें, और तीर के निशान अनुसार दोनों तरफ से मोड़ लीजिए.

(३)

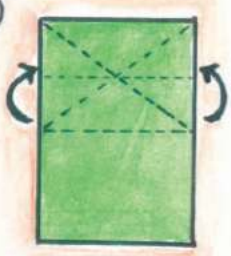

अब इसे चित्रानुसार मध्य में मोड़ो और फिर इसे तीर निशान अनुसार अंदर की ओर दबाओ.

(४)

कागज को अंदर की ओर दबाने के बाद यह इस तरह दिखेगा.

(५)

अब चित्र में ऊपर त्रिभुज दिख रहा है इसके दोनों कोनों को तीर निशान अनुसार ऊपर मोड़ कर दबा दीजिए.

(६)

अब यह इस तरह हो जाएगा.

(७)

अब चित्रानुसार लंबवत भाग के दोनों किनारों से तीर निशान के अनुसार भीतर की ओर मोड़ दीजिए.

(८)

इस मोड़ के बाद नीचे वाले हिस्से को आधे से कम भाग को चित्रानुसार ऊपर मोड़ दीजिए.

(९)

इस मुड़े हिस्से को थोड़ा सा नीचे चित्रानुसार मोड़ कर दबा दीजिए, इसे नीचे रख कर चपटा कर दबाएँ. इसे रंगीन करके मेंढक की आँखें-मुँह बनाकर –

(१०)

अँगुली से दबाने पर यह मेंढक फुदकेगा।

अनोखी हैं बेटियाँ

साक्षात्कारकत्री
डॉ. लता अग्रवाल

(विश्व की सबसे नन्हीं फोटोग्राफर नैनिका से शिक्षाविद एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. लता अग्रवाल की बात)

भारत वह देश है जहाँ प्रतिभा बच्चों में जन्मते ही देखने को मिलती है। फिर यदि इन प्रतिभाओं को माता–पिता रूपी पंख और उड़ने के लिए खुला आसमान मिल जाय तो कहने ही क्या। वह समय अब बीतों दिनों की बात हो गया जब कहते थे बेटी हो बेटी सी रहो।

आज माता पिता में जागरूकता आई है और बेटियों ने नई परिभाषा गढ़ी है। इसका एक उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करने जा रही हूँ, फोटोग्राफी के क्षेत्र में अपना नाम कमाने वाली नैनिका गुप्ता से बातचीत करेंगे।

डॉ. लता अग्रवाल – नैनिका! बड़ा ही प्यारा नाम है, किसने रखा आपका यह नाम?

नैनिका गुप्ता – जी, माँ और दादी दोनों ने रखा।

डॉ. अग्रवाल – आपको पता है इस नाम का क्या अर्थ होता है?

नैनिका – मेरा नाम नैना रखा और जब मेरा स्कूल में प्रवेश हुआ तब मेरा नाम नैनिका हुआ। यह नाम दादी ने नैना देवी के नाम पर रखा है। माँ ने बताया था जो आँखों (नैनों) की बात जान ले वो नैनिका।

डॉ. अग्रवाल – आप दिल्ली के प्रेसिडियम स्कूल में पढ़ती हैं, इस समय किस क्लास में हैं, हमें बताइए?

नैनिका – सेकेंड क्लास में।

डॉ अग्रवाल – नैनिका! आपको बहुत छोटी आयु में world's youngest photographer का अवार्ड प्राप्त हुआ है। बहत–बहुत शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद हमारा। क्या उम्र रही आपकी जब आप फोटोग्राफी से जुड़ीं?

नैनिका – डेढ़ साल की उम्र से मैं फोटोग्राफी कर रही हूँ और मुझे ढाई साल में आकर पहला अवार्ड मिला।

डॉ. अग्रवाल – ओह! इतनी छोटी उम्र में तो बच्चे खिलौने वाले कैमरे से खेलते हैं, सचमुच के कैमरे से खेलने का ख्याल आपको कैसे आया?

नैनिका – छोटे बच्चों के सामने जो कुछ भी आ जाये उसे वह खिलौना समझ लेते हैं। मैं अपनी माँ–पिताजी के साथ स्टूडियो जाया करती थी और फोटो शूट्स देखा करती थी। मैं देखती थी कि माँ–पिताजी यह क्या चीज को अपने मुँह के आगे लगाके उसमें से देखते हैं और बटन दबाते थे समझ नहीं आता था। उनको देख–देख कर मैं वैसा करने लगी थी।

डॉ. अग्रवाल – अच्छा, यह बताइए सबसे पहले कैमरा कब उठाया आपने... आपकी पहली तस्वीर देखकर माँ–पिताजी या फिर अन्य लोगों की क्या प्रतिक्रिया रही?

नैनिका – डेढ़ वर्ष की उम्र में मैंने पहली बार कैमरा उठाया था। उस दिन माँ–पिताजी की विवाह की वर्षगाँठ

थी। हम सब कुछ मेहमानों के साथ किसी होटल में भोजन करने गए तब वहाँ पे केक काटते समय मैनें कैमरा निकलाते हुए पिताजी को देखा और तब कैमरे में झपटा मारा और तब फोटो क्लिक करना चालू किया। सब देख हैरान हो गये कि मैं डी एस एल.आर. कैमरा कैसे चला रही हूँ।

डॉ. अग्रवाल – नैनिका! माँ–पिताजी दोनों ही फैशन फोटोग्राफी के क्षेत्र से हैं, क्या हम कह सकते हैं यह शौक आपको विरासत में मिला?

नैनिका – जी हाँ मुझे लगता है कि यह शौक मुझे माँ–पिताजी से मिला। जब मैं तीन महीने की थी तब से मैं माँ–पिताजी के साथ स्टूडियो में जाया करती थीं।

डॉ. अग्रवाल – फोटोग्राफी आपका शौक है, बड़े होकर किसी अलग फील्ड में काम करने का इरादा है या फिर इसे ही कॅरियर बनाने का सोचा है?

नैनिका – फोटोग्राफी में मेरी रुचि तो है ही पर मुझे डांस करना, पेंटिंग बनाना भी पसंद है। बड़े होकर मैं किस क्षेत्र में जाऊँ... अभी पता नहीं पर फोटोग्राफी तो में छोड़ नहीं सकती।

डॉ. अग्रवाल – अच्छा! आजकल पालकगण बच्चों से परेशान हैं कि वो मोबाईल पर बहुत समय बिताते हैं, कार्टून चैनलों में इतने व्यस्त रहते हैं कि पढ़ाई से उनका ध्यान भटक जाता है। आप कितना मोबाईल और कार्टून से जुड़ी हैं... क्या आपको लेकर माँ–पिताजी की ऐसी शिकायत है?

नैनिका – मोबाईल से सभी बच्चे आकर्षित होते हैं, मैंने भी मोबाईल का काफी उपयोग किया है, और कार्टून भी देखती थी। लेकिन पढ़ाई में भी उतना ही समय देती हूँ इसलिए शिकायत का मौका नहीं देती।

डॉ. अग्रवाल – आपकी बनाई फोटोज की एक एलबम (बुक) भी तैयार हो चुकी थी, किस तरह के फोटो आपको आकर्षित करते हैं?

नैनिका – मेरी खींची कई प्रकार के चित्र इस फोटोबुक में प्रकाशित है। मुझे ज्यादातर यात्रा, प्रकृति और बच्चों की फोटो खींचना पसंद है। मैं जब अपने नाना नानी के घर जाती हूँ तब मुझे वहाँ की वादियाँ और पहाड़ों की खूबसूरती बहुत आकर्षित करती है।

डॉ. लता अग्रवाल – आपको Ratan-A-hindustan (रत्न ए हिन्दोस्तान) अवार्ड से नवाजा गया। कुछ इस अवार्ड के सम्बन्ध में बताइए?

नैनिका – रत्न ए हिन्दुस्तान अवार्ड मेरा पहला अवार्ड है जो मुझे करनाल में मिला था। मैं उस समय ढाई साल की थी। यह अवार्ड समारोह प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति और युवा बोलेगा मंच द्वारा रखा गया था जिसमें कि और ऐसे होनहार बच्चों को सम्मानित किया गया था। मेरे माता–पिता और दादा–दादी बहुत ही खुश हुए थे।

डॉ. लता अग्रवाल – आपको The Bollywood Faces अवार्ड भी दिया गया है, फैशन शो में भी आपका प्रदर्शन कमाल का है कई बार प्रथम पुरस्कार जीत चुकी हैं, डाँस भी आप बहुत अच्छा करती हैं... मतलब मुझे आपके दरवाजे पर चारों ओर से दस्तक आती दिखाई दे रही है। आपका रुझान किस ओर है?

नैनिका – मैं जब प्ले स्कूल में थी, तब मैं मिस मदर्स प्राइम की प्रथम रनरअप रही। कुछ फैशन शो के गुण मैंने स्कूल से सीखे थे और मैं अधिकतर माँ–पिताजी के साथ फैशन शो और डाँस काम्पीटीशन में जाया करती थी तो शायद इसिलए मैं फैशन शो और डाँस कर पायी। मुझे डांस करना भी बहुत पसंद है।

डॉ. लता अग्रवाल – ये बताइए कम उम्र में इतना नेम फेम मिल जाने से पढाई में कोई दिक्कत...? मेरा मतलब, मन में कभी यह विचार आया कि अब हो गया इतना नाम... पढ़कर भी शायद इता नाम न होता, अब

पढ़ाई–वढ़ाई... नाम भर के लिए।

नैनिका – छोटी सी उम्र में नेम फेम मिल जाना यह काफी बड़ी बात है। पढ़ाई बहुत जरूरी है हम सब के लिए। मेरे माता–पिता को काफी आलोचनाएँ भी सुननी पड़ी पर वह सबको समझाते रहे कि प्ले स्कूल का मतलब यह नहीं कि खाली पढ़ाई होती है पर इसके साथ–साथ और एक्टिविटीज भी जरूरी होती है जिसके कारण स्टूडेंट में हर एक चीज का कॉन्फिडेंस आता है जो की लाइफ में बहुत ही इम्पोर्टेन्ट है। छोटे बच्चों के पास पढाई का प्रेशर बहुत ही कम होता है और एक्स्ट्रा एक्टिविटीज के लिए टाइम बड़े आसानी से निकल जाता है, और ज्यादातर शो सप्ताह कें अंत में होते हैं जब विद्यालय की छुट्टी होती है। मुझे मेरे अभिभावक और विद्यालय से काफी सहयोग मिलता है। यह सही समय है बच्चों को अन्य गतिविधियों में कुछ करने के लिए जिसमें की बच्चे मोबाइल और टी.वी. से हटकर इसमें ध्यान लगाते है और बच्चे एक्टिव भी रहते हैं। बड़ी कक्षा में आ के पढ़ाई का दबाव बढ़ जाता है और तब यह गतिविधियाँ ठीक से नहीं हो पाती है। आजकल तो बच्चों के लिए बहुत सा क्षेत्र खुला है।

डॉ. लता अग्रवाल – आपको Baby doll से लेकर Beat Orator Award, Most Independent Student Award, Outstanding Student Award in Rhyme, Outstanding Student Award in Story Telling, Outstanding Student Award, Miss diva of India, Ratan-A-Hindustan, India Book of Record! इतने सारे अवार्ड, कितने नाम लूँ.. इस नन्हीं सी उम्र में आपको मिल चुके हैं जानती हैं इन अवार्डस् का मतलब क्या होता है?

नैनिका – जब मैं डेढ़ साल की थी तब मुझे इन सब अवार्ड का मतलब ही नहीं पता था मैं देखती थी कि माँ–पिताजी जब कोई अवार्ड के कार्यक्रम में जाते थे तो दोनों को अवार्ड मिलता था और मैं उनके साथ मंच पर

जाती थी जब वो अवार्ड हाथ में लेते थे तब मैं उनके हाथ से छीन लेती थी। और जब मुझे सम्मानित किया जाता था तब भी मुझे यह समझ नहीं आता था कि मुझे ये सम्मान क्यों दिया जा रहा है। तीन साल बाद मुझे समझ मैं आया कि यह अवार्ड क्यों दिया जाता है।

डॉ. लता अग्रवाल – आप राइम पढ़ती हैं, क्या लिखने में भी रूचि है?

नैनिका– राइम पढ़ना मुझे अच्छा लगता है, लिखने में रूचि तो है पर आर्ट एंड क्राफ्ट के साथ जैसे मुझे दूसरों को ग्रीटिंग कार्ड बनाके उस पर कुछ लिख कर देना बहुत पसंद है।

डॉ. लता अग्रवाल – आप अब रोल मॉउल बन चुकी है, जैसे अमिताभ बच्चन हैं। जब वे कहते हैं किसी समाज सेवा कार्य से जुड़ी हैं या जुड़ना चाहेंगी?

नैनिका – मैं कहीं भी जाती हूँ अगर वहाँ पर लोग मुझे जानते हैं तब वह लोग अपने बच्चों को कहते हैं देखो यह छोटी सी बच्ची कितनी प्रतिभावान है उसके जैसा बनो। जी हाँ मुझे समाज सेवा कार्य से जुड़ने का मन है क्यूंकि मुझे मदद करना बहुत पसंद है। मैं घर पर जब खाली होती हूँ तब मैं सबसे पूछती रहती हूँ कि मुझे कोई काम बताओ।

डॉ. लता अग्रवाल – बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर आपने भाषण दिया जिसे लोगों ने बहुत सराहा। क्या वो

संदेश हमारे पाठको और देश की बेटियों के लिए दे सकती हैं?

नैनिका – बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान और जागरूकता से समाज में काफी बदलाव देखने को मिला। बेटियों को काफी प्रोत्साहन मिला और बेटियां पढ़ी भी और बड़ी भी हैं। मुझे काफी अच्छा परिवार मिला है जो मेरी हर एक बात को महत्व देता है।

डॉ. लता अग्रवाल – इतनी छोटी उम्र में आपने फेस बुक अकाउंट भी बना रखा है।

नैनिका – जी हाँ मैं फेस बुक मैं भी हूँ पर मेरा अकांउट नहीं है, वह मेरा पेज है जो मेरे माँ–पिताजी अपडेट करते रहते हैं।

डॉ. लता अग्रवाल –आप वाकई Young Achiever हैं, निश्चय ही परिवार, समाज और विद्यालय का व्यवहार आपके प्रति बहुत स्नेह भरा होगा। आप क्या सोचती हैं भविष्य में भी ऐसे कार्य पर सम्मान हासिल करना है ताकि सबका स्नेह मिलता रहे?

नैनिका – सामाजिक होना बहुत अच्छी बात है, नए–नए लोगों से मिलना यानी नई–नई ओपोरचुनिटी का मिलना। मुझे सबका आशीर्वाद पाना है और आगे बढ़ते रहना है।

डॉ. लता अग्रवाल – आपको नानी का साथ पसंद था। (अब आपकी नानी नहीं रहीं) मगर जब आप छुट्टियों में नानी के घर जाती थीं क्या वे पुराने किस्से कहानियाँ सुनाती थीं? कैसे लगती है नानी की कहानी?

नैनिका – नाना–नानी का साथ सब बच्चों को अच्छा लगता है मैं जब छोटी सी थी तब मैं उनके साथ घूमने भी गई थी। और उनकी गोद में बैठकर खेलती भी थी। मुझे ठीक से तो याद नहीं पर माँ नानीजी के बारे में बताया करती थीं।

डॉ. लता अग्रवाल – इतनी नन्हीं सी जान और इतने सारे काम, फैशन शो में वाक करने जाना है, डाँस, एक्टिंग, एवार्ड लेने जाना है ऊपर से विद्यालय का गृहकार्य भी करना है और हाँ फेसबुक भी अपडेट रखना है... इतने सारे कामों के बीच कहीं दबाव महसूस करती हो?

नैनिका – मुझे कोई दबाव महसूस नहीं होता। क्योंकि इतने सारे काम एक साथ तो करते नहीं। सबका अलग–अलग समय है। फेसबुक पेज मेरे माँ–पिताजी अपडेट करते हैं। अब मैंने थोड़ा–थोड़ा कम्प्यूटर भी चलाना सीखा है और मैंने पिताजी से फोटो की एडिटिंग भी करना सीखी है।

डॉ. लता अग्रवाल – हमारे देश में कई ऐसे बच्चे भी हैं जिनमें प्रतिभा तो है मगर उन्हें आपकी तरह हुनर विरासत में नहीं मिला न ही अवसर, ऐसे बच्चों के लिए क्या कहना चाहेंगी?

नैनिका– आज कल ऐसे बहुत सारे बच्चे हैं जिनके बारे में ऐसा है। मैंने ऐसे भी बच्चे देखे हैं जिनका कोई बैकग्राउण्ड उस रिलेटेड फील्ड से नहीं है जो कि उनका टैलेंट है। पर आजकल इन बच्चों को भी मंच मिल रहा है। ऐसी बहुत से सामाजिक संस्था हैं जो उन बच्चों के लिए भी कार्य करती हैं जिनका कोई सपोर्ट नहीं है। मैंने खुद एक ऐसे इवेंट में देखा है जहाँ पर मेरे माता–पिताजी ने उन बच्चों को प्रोत्साहित किया और उनके लिए कपड़े और सामान भी दिया है। मैं भी बड़े होकर ऐसे ही लोगों की मदद करना चाहूंगी।

● **भोपाल (म.प्र.)**

आजादी की तासीर

लघु कहानी

माणक तुलसीराम गौड़

जंगल में एक शेर अपनी माँ से बिछुड़ गया और शिकारियों के जाल में फंस गया। उन्होंने उसे सर्कस वालों के हाथों बेचकर एक मोटी रकम कमाई। सर्कस वालों ने उसे पीट-पीट कर कई करतब सिखाए और जनता को दिखा-दिखा कर लाखों रुपये कमाए। बदले में शेर को मात्र सीमित भोजन ही मिलता जिससे वह केवल जिंदा रह सके। शेर के गले में लोहे की जंजीर और पाँवों में मजबूत बेड़ियाँ पड़ी रहती ताकि वह हर समय काबू में रह सके।

प्रारम्भ में वह इन जंजीर और बेड़ियों का गुर्राकर विरोध करता, परन्तु अपने मालिक के हाथों बेंत और चाबुक से पिटकर शान्त हो जाता। फिर भी रह-रह कर उसे अपना शेरपन याद आता और बीच-बीच में दहाड़ भी मारता। परन्तु उस दहाड़ में रोब कम और कराहट ज्यादा महसूम होती थी।

शेर को गुलामी की जिन्दगी जीते अब पूरे पन्द्रह बरस बीत चुके हैं। अब गुलामी, शोषण, मार-पीट और अपमान को अपनी नियति मान लिया है।

इस बीच एक सामाजिक संगठन जिसका उद्देश्य वनों के निरीह प्राणियों पर हो रहे अत्याचारों से मुक्ति दिलाना था। उनकी नजर उस शेर पर पड़ी और उन्होंने आवश्यक कार्यवाही करके शेर को उस सर्कस से छुड़ाया। उसे उन जंजीरों और बेड़ियों से मुक्त करवाया। मुक्ति के पश्चात भी शेर चौबीस घंटे तक वहीं बैठा रहा। उसे मुक्ति का भरोसा नहीं हो रहा था और ऊपर से गुलामी की मानसिकता से मुक्ति नहीं पा रहा था। उससे छुटकारा नहीं पा रहा था।

दूसरे दिन वह स्वतः ही चलकर जंगल की ओर प्रस्थान कर गया। मगर न तो उसके हाथ-पाँव काम कर रहे हैं, न हिम्मत साथ दे रही है और न दहाड़ में वह बादशाहत। जब छोटे-मोटे प्रयासों से उसे शिकार नहीं मिला तो वह अपने पेट की आग बुझाने हेतु पुनः सर्कस की ओर लौट आया। जहाँ उसे बिना पसीना बहाए और स्वतः ही बिना शिकार किए सीमित मात्रा में भोजन मिल जाया करता था, मगर तब तक सर्कस का डेरा वहाँ से उठकर कहीं अन्यत्र जा चुका था।

यह दृश्य देखकर पहले तो वह निराश हुआ, मगर कुछ ही पलों में उसे अपने शेर होने का असली भान हुआ और उसे आजादी का असली एहसास हुआ। बस फिर क्या था? स्वतंत्रता का भास होते ही वह स्वतः ही पीछे मुड़ा, दहाड़ भरी और पूंछ को फटकारते हुए जंगल की ओर लपक पड़ा। आज उसकी दहाड़ में गर्जना थी। असली शेरपन था। यही तो होती है आजादी की तासीर।

● बैगलुरु (कर्नाटक)

सही उत्तर –
संस्कृति प्रश्नमाला : वानरराज सुग्रीव, शमी वृक्ष, उत्तरी अमरीका, कोणार्क, इन्द्रयुध वज्र, दरिया सारंग, आर्यभट्ट (प्रथम), वैकुण्ठनाथ शुक्ल, सुमेलगिरि युद्ध, प्रो राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया'
उलझ गए : मोहन गोपी का फुफेरा भाई है।

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

गोवा का राज्य वृक्ष

साज

• डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत का यह वृक्ष अनोखा,
मैदानों से नाता,
बारह सौ मीटर तक ऊँचे,
भागों में मिल जाता।
मौसम चाहे जैसा भी हो,
साज नहीं घबराता।
रंग बदलते मौसम में भी,
अपनी जड़ें जमाता।
पेड़ लगाते ही यह बढ़ता,
ऊपर उठता जाता।
बीस वर्ष में सौ फुट ऊँचा,
अपना रूप दिखाता।
सीधा तना दरारों वाला,
शाखाएँ अति छोटी।
छाल निराली धूसर काली,
एक इंच तक मोटी।
अंग सभी उपयोगी इसके,
देशी दवा बनाते।
ब्रेन हेमरेज और कैन्सर,
से भी जा टकराते।

• भोपाल (म.प्र.)

महत्वपूर्ण हैं अंतरिक्षयान

आधुनिक अंतरिक्षयान, अंतरिक्ष में उपग्रहों को स्थापित करने, अंतरिक्षयात्रियों को साथ ले जाने एवं तकनीकी विकास सम्बंधी कार्यों के लिए इस्तेमाल में लिए जाते हैं.

लेकिन इनमें से प्रारंभिक कुछ हथियारों के ही परिष्कृत रूप थे. शुरूआत में ये एक ही बार इस्तेमाल किए जा सकते थे जैसे रॉकेट मिसाइल. विज्ञान के विकास के साथ स्पेसशटल का निर्माण हुआ. क्या आप जानते हैं अंतरिक्ष में जाने के लिए रॉकेटों को एक जम्बो जेट विमान से 40 गुना तेज गति चाहिए होती है क्योंकि इससे जरा धीरे होते ही पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण उन्हें वापस खींच लेगा.

स्पेसशटल वह यान होता है जिसे बार बार अंतरिक्ष में भेजा जा सकता है क्योंकि यह लौटकर वायुयान की तरह धरती पर आसानी से उतर सकता है. पृथ्वी की ओर लौटते शटल पृथ्वी के सबसे भारी बिना उर्जा उड़ने वाले यान हैं ये तेजी से गिरते हैं. और एक पैराशूट की मदद से रनवे पर धीरे कर रोका जाता है.

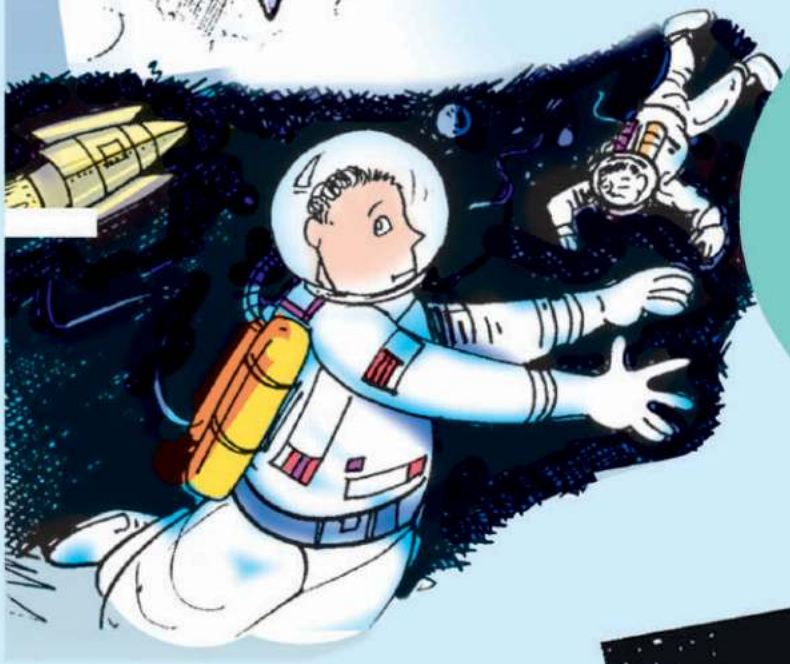

लोग अंतरिक्ष की सैर के सपने अर्से से देखते आए थे लेकिन 1950 के बाद तेज रॉकेटों के विकास से यह संभव होने की रूपरेखा तैयार हो गई. जिन्हें अंतरिक्ष में भेजा जा सका, वे लोग अंतरिक्ष यात्री कहे जाते हैं.

रॉकेट ,आधुनिक स्पेसशटल के साथ इंसानों और अंतरिक्ष कार्य सम्बंधी सामग्री और उपग्रहों को पृथ्वी के परिभ्रमण कक्ष में स्थापित करने के काम में आते हैं.

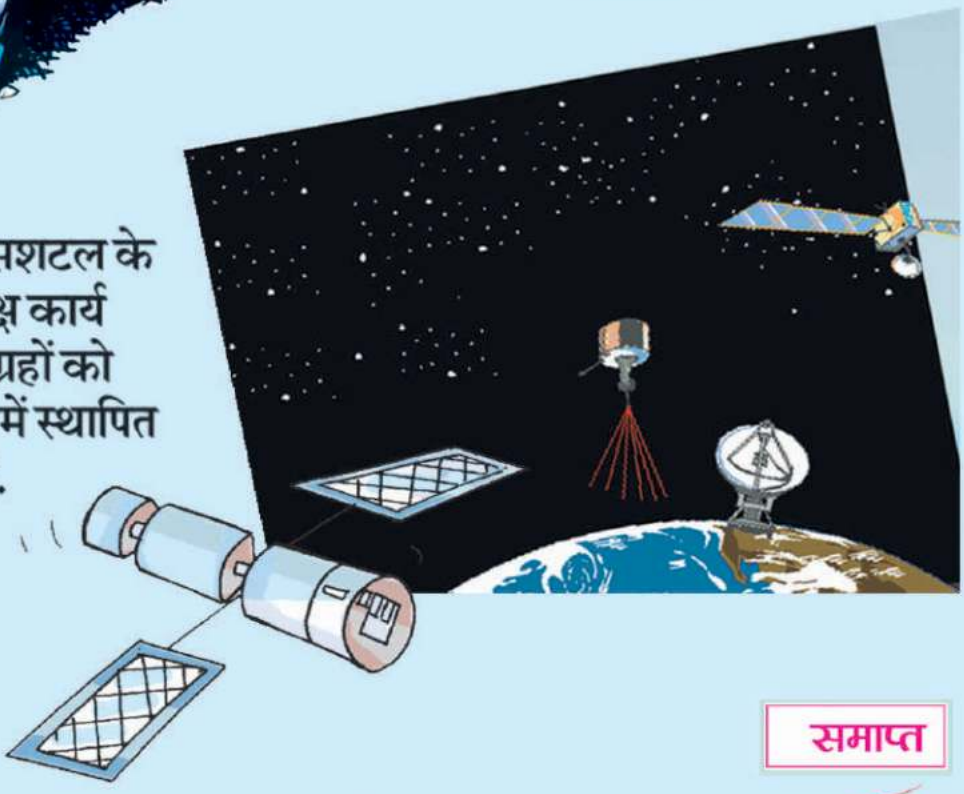

समाप्त

|| बाल प्रस्तुति ||

हम भारत की शान

- रितेश प्रजापति

हम धरती के उगते सूरज,
हम भारत की शान।
धरती का कण कण बोलेगा,
जननी का जयगान।।
अमर देश के अमर पुजारी,
वीरों की संतान।
बाल वाहिनी के सैनिक हम,
चलते सीना तान।।
ध्येय दूर हो, दिशा शूल हो,
आँधी या तूफान।
सदा बढ़ेगे, नहीं रुकेंगे,
जब तक तन में प्राण।।
शीश हमारा नहीं झुकेगा,
जीवन की यह आन।
जन-जन में सुख भर देंगे,
देकर तन-मन-प्राण।।

● स्वरूपगंज (राज.)

छः अंगुल मुस्कान

रोहन : आज मेरा बेटा प्रथम श्रेणी में आया।
रमेश : शाबाश... किसमें आया।
रोहन : राजधानी एक्सप्रेस में।

*****

नेताजी से किसी ने पूछा, 'आपको घोटाले में फंसकर कैसा लगता है?'
नेताजी – अपने वकीलों की दलीलों को सुनकर मुझे ऐसा नहीं लगता कि मैंने कोई घोटाला किया है।

*****

पत्नी (अपने प्लंबर पति से) अजी सुनते हो, बबलु परीक्षा देने गया है। आप जरा जल्दी से उसके विद्यालय चले जाओ।
पति– क्यों क्या बात हो गयी?
पत्नी – मोबाइल पर खबर मिली है कि उसका पेपर लीक हो गया है।

*****

महिला – भैया आपने तेल तो दे दिया, इसके साथ फ्री गिफ्ट तो दो?
दुकाकनदार – तेल के साथ कुछ भी फ्री नहीं है मैडम
महिला– झूठ मत बोलो, यह बोतल पर लिखा तो है कॉलेस्ट्रॉल फ्री।

*****

दुनियादारी

चित्रकथा- ...

इकलौता बेटा मर गया तो दुखी मां-बाप का रोना रोके ना रुका..

तब गांव के ज्ञानी साधु महाराज ने समझाया-

रामबल, मृत्यु तो शरीर की होती है.. आत्मा अमर है उसकी मृत्यु नहीं होती, शोक व्यर्थ है. अपने को शांत करो पुत्र.

कुछ दिनों बाद रामबल ने उन साधु महाराज को विलाप करते देखा -

हे भगवान मेरी बकरी को क्यों उठा लिया..

महाराज, आत्मा अमर है और मृत्यु पर शोक नहीं करना चाहिए ये उपदेश आपने मेरे इकलौते पुत्र के मर जाने पर दिया था फिर आज..

..एक बकरी के लिए आप इतना विलाप क्यों कर रहे हैं?

रामबल लड़का तेरा था लेकिन बकरी तो मेरी थी न.

चूँ-चूँ

• भगवतीप्रसाद द्विवेदी

बच्चों से भोले नादान
हैं शैतानों के शैतान!
भूरे, काले और सफेद
भूरे इनमें सबसे तेज
धमा-चौकड़ी, धींगा-मस्ती
उछल कूद, आपस में कुश्ती
करते सबकी नींद हराम
ये शैतानों के शैतान!
बिल से बाहर आ खिल जाते
भोजन तहस-नहस कर खाते
कपड़े और किताबें काटें
कुतर-कुतरकर नहीं अघाते
चूँ-चूँ गा करते ऐलान
ये शैतानों के शैतान!
मूँछें देखो, देखो आँखें
दुम ऐसी मानो हो पाँखें
वहाँ-यहाँ बेखटके आते
फिर क्षण भर में फुर्र हो जाते
बड़े-बड़े के काटें कान
ये शैतानों के शैतान!
चतुराई की चमक दिखाते
झाँसे में ये कभी न आते
पिंजरा और जहर की गोली!
पास न फटकें समझ ठिठोली
देख बिल्लियाँ हैं हैरान
ये चूहे कितने शैतान!

– पटना (बिहार)

चूहा निकला ले तलवार

• शिवमोहन यादव

चूहा निकला ले तलवार,
बिल्ली को वह देगा मार।
चुहिया ने उसको समझाया,
लेकिन उसकी समझ न आया।
चुहिया को देकर ललकार !!
चूहा निकला ले तलवार
बांध तौलिया बाहर आया,
फिर बिल्ली का पता लगाया।
बाहर आ जा बिल्ली रानी,
आज से तेरी खत्म कहानी
बोला हाथ पैर फटकार!!
चूहा निकला ले तलवार।
सोती बिल्ली होश में आई,
हड़की सुनकर वह अकुलाई।
जब बिल्ली बाहर को आई,
चूहा देख बहुत हर्षाई।
बोली अच्छा मिला शिकार!!
चूहा निकला ले तलवार।
आई वह चूहे के पास,
मार झपट्टा लेकर आस।
ज्योंही बिल्ली करती वार,
चूहे ने मारी तलवार।
जीत चुका था वह इस बार!!
चूहा निकला ले तलवार।

– नेरा कृपालपुर (उ.प्र.)

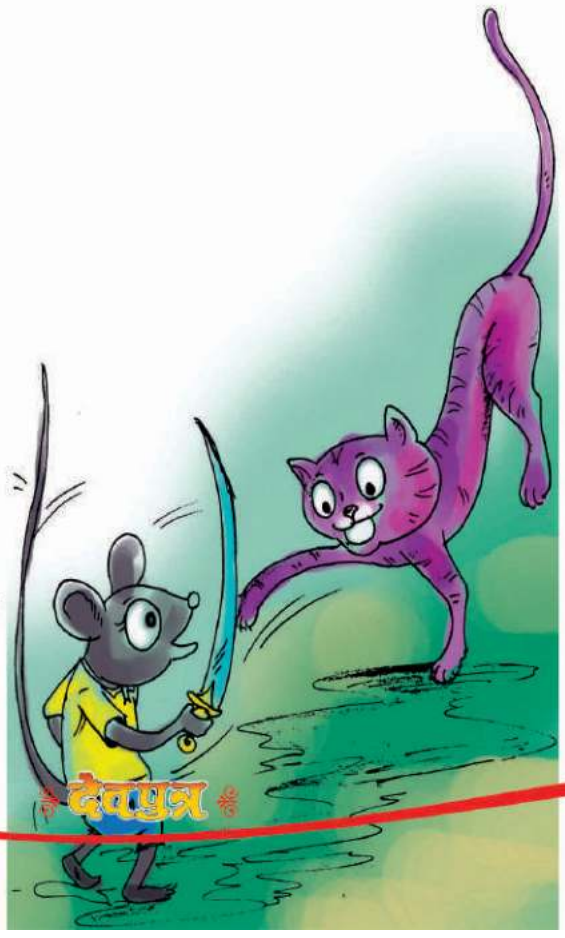

चुहिया

● नीलम राकेश

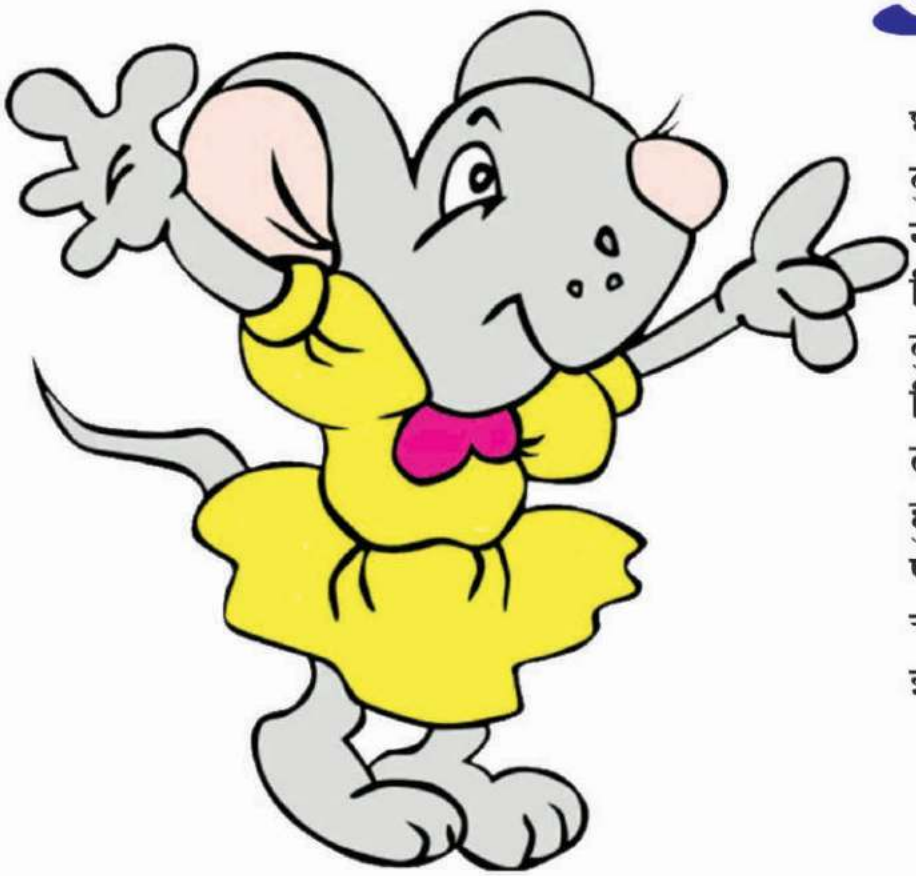

घर में चुहिया उधम मचाती
कुतर कुतर कर रोटी खाती
नहीं किसी से वह घबराती
बिल में जाती बाहर आती
कुतर दिये अम्मा के कपड़े
किये बहुत ऐसे ही लफड़े
तब माँ लाई चूहे-दानी
हुई सभी को थी हैरानी
पूरी उसमें एक फंसाई
चुहिया कुछ भी समझ न पाई
झट से उसे कुतरने आई
अन्दर जा करके पछताई
कैद हुई लालच के मारे
हवालात में किसे पुकारे।

– लखनऊ (उ.प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'चूहा' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

चित्र पहेली

• चांद मो. घोसी

जल की रानी का चित्र एक से २९ तक के बिंदु मिलाकर बनाइए और फिर उसे सुन्दर रंगों से सजाइए।

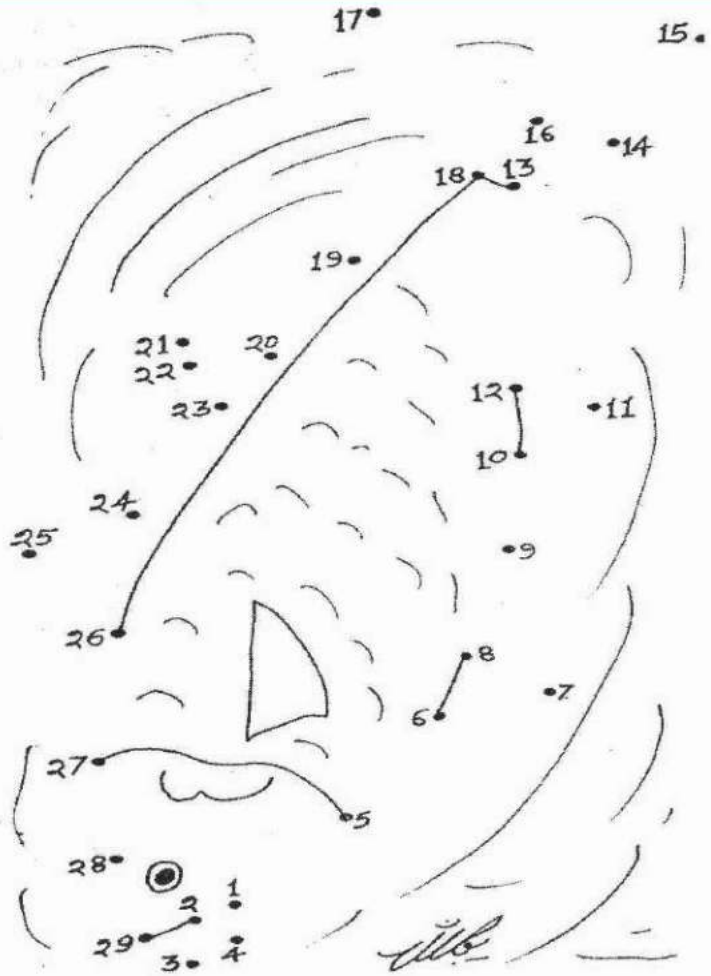

डोर प्यार की

कविता

महेन्द्र सी. कपिल

बहन- भाई का
प्यार रुपहला
ढेरों खुशियाँ लाया।
मन का बंधन
रक्षा के
धागों में बंध आया।
धागे में है
प्यार हृदय का
प्यार जताने आया।
डोर प्यार की
कभी न तोड़ो
यह संदेशा लाया

• अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

॥ मेरी पसंद॥

हिन्दुस्तान की तलवार

प्रस्तुति
हिमांशु पटेल

जिसे सुनकर दहलती थी कभी छाती सिकंदर की,
जिसे सुनकर कि कर से छूटती थी तेग बाबर की,
जिसे सुन शत्रु की फौंजें बिखरती थीं, सिहरती थीं,
विसर्जन की शरण ले डूबती नावें उभरती थीं।
हुई नीली कि जिसकी चोट से आकाश की छाती,
न यह समझों कि अब रण बाँकुरी हुंकार सोई है।
न यह समझों कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

जिसके अंश से पैदा हुए थे हर्ष और विक्रम
जिसके गीत गाता आ रहा सवंत्सरों का क्रम
जिसके नाम पर तलवार खींची थी शिवाजी ने,
किया संग्राम अन्तिम श्वास तक राणा प्रतापी ने,
किया था नाम पर जिसके कभी चित्तौड़ ने जौहर,
न यह समझों कि धमनी में लहू की धार सोई है।
न यह समझों कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

दिया है शान्ति का संदेश ही हमने सदा जग को,
अहिंसा का दिया उपदेश भी हमने सदा जग को,
न इसका अर्थ हम पुरूषत्व का बलिदान कर देंगे।
न इसका अर्थ हम नारीत्व का अपमान कर लेंगे।
रहें इंसान चुप कैसे कि चरणाघात सहकर जब,
उमड़ उठती धरा पर धूल, जो लाचार सोई है।
न यह समझों कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

न सीमा का हमारे देश ने विस्तार चाहा है,
किसी के स्वर्ण पर हमनें नहीं अधिकार चाहा है,
मगर यह बात कहने में न चूके हैं, न चूकेंगे।
लहू देंगे मगर इस देश की माटी नहीं देंगे।
किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा,
उठेगा तब प्रलय की आग जिस पर क्षार* सोई है।
न यह समझों कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

(क्षार=राख)

● मण्डलेश्वर (म.प्र.)

श्री कृष्ण

कविता

प्रभुदयाल श्रीवास्तव

कृष्ण पक्ष की अष्टमी और भादों का माह
भरत भूमि पर हुआ था चेतन पुंज प्रवाह।
चेतन पुंज प्रवाह धन्य थी मथुरा नगरी
शक्ति अलौकिक तेज पुंज बनकर एक उभरी।
युग प्रवर्तक कृष्ण अवतरित होकर आये
वासुदेव देवकी माता के पुत्र कहाये।

उनके मामा कंस का बड़ा क्रूर था काम
वीर कृष्ण को मारने किये उपाय तमाम।
किये उपाय तमाम जतन लाखों कर डाले
किन्तु पक्ष में रही गेंद कृष्णा के पाले।
वो तो थे भगवान, कंस क्या कर सकता था
विष्णु का अवदान भला कब मर सकता था।

सदा सत्य के साथ में रहे कृष्ण भगवान
दिया धर्म को विजय का दुनिया को वरदान।
दुनिया को वरदान बने अर्जुन के साथी
सदा जलाई धर्म दीप में सच की बाती।
कुरुक्षेत्र में अर्जुन को जो ज्ञान कराया
वही संकलित ग्रंथ ज्ञान, गीता कहलाया।

एक-एक श्लोक में छुपे गूढ़ संदेश
जीवन की सच्चाई है गीता के उपदेश।
गीता के उपदेश जिन्होंने समझे जाने
नहीं रहा कुछ शेष उन्हें दुनिया में पाने।
पढ़ो रोज गीता और औरों को पढ़वाओ
स्वयं ले गीता ज्ञान, ज्ञान घर-घर पहुँचाओ।

• छिंदवाड़ा (म.प्र.)

कितने तिरंगे

चित्रकथा
देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

जादुई चश्मेः डॉ. मंजरी शुक्ला की रस, मनोरंजन और जीवनमूल्य सहित बालमन के नटखटपन को व्यक्त करती १४ कहानियाँ।

प्रकाशक – सूरज पाकेट बुक्स, ठाणे, (महाराष्ट्र)

मूल्य ८०/-

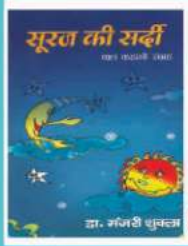

सूरज की सर्दीः डॉ. मंजरी शुक्ला की बालमन वे विविध रंगों को पूरी जीवन्तता से रचती, उकेरती १५ बाल कहानियाँ।

प्रकाशक – देवभूमि विचार मंच प्रकाशन, बी–ब्लाक, मंदाकिनी विहार, सहस्रधारा रोड़, देहरादून २४८००१ (उत्तराखण्ड)

मूल्य १००/-

जुगलबंदीः श्री प्रदीप कुमार शुक्ल और डॉ. मंजरी शुक्ल का बाल साहित्य में अनूठा प्रयोग। एक ही पुस्तक में बाल कथाएँ और उन्हीं पर दूसरे लेखक की बाल कविताएँ। इस सुन्दर प्रयोग का आनंद लें।

प्रकाशक – रश्मि प्रकाशन, २०४, सनशाइन अपार्टमेंट, बी–३बी, कृष्णा नगर, लखनऊ (उ.प्र.)

मूल्य ११०/-

मंगल ग्रह के जुगनू (६)ः श्री प्रबोध कुमार गोविल इस शृंखला का छटा पुष्प जिसकी सम्पूर्ण बहुरंगी और चित्रांकित पृष्ठों पर है मनोरंजक बाल कथा।

प्रकाशक – अंजली प्रकाशन, ई–७७६/७, लालकोठी योजना, जयपुर – १५ (राज.)

मूल्य १००/-

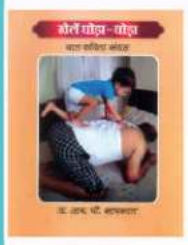

खेलें घोड़ा घोड़ाः डॉ. आर.पी. सारस्वत की सदैव सी रोचक मनोरंजक चित्रमय २४ बाल कविताएँ।

प्रकाशक – नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास, एन– १६७–१६८, पैरामाउण्ट ट्यूलिप, दिल्ली रोड़, सहारनपुर २४७००१ (उ.प्र.)

मूल्य १००/-

दो विशेष शोध ग्रंथ

मूल्य १००/-

हिन्दी बाल साहित्य आधुनिक परिदृश्य

हिन्दी बाल साहित्य के अनन्य साधक व हिन्दी बाल साहित्य आधुनिक परिदृश्य

सुप्रसिद्ध बाल साहित्य लेखिका, संपादक एवं शोधप्रवण लेखिका डॉ. शकुन्तला कालरा की बाल साहित्य की आधुनिक दशा व दिशा पर शोधपरक सामग्री से युक्त हिन्दी बाल साहित्य शोधार्थियों एवं सर्जकों व जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी पुस्तकें।

प्रकाशक

नमन प्रकाशन, ४२३१/१, अंसारी रोड़, दरियागंज, नईदिल्ली

मूल्य १००/-

हिन्दी बाल साहित्य के अनन्य साधक

सादर श्रद्धांजलि

स्वराज्य के तिलक

परतंत्रता की कालिख पुते भारत के गगन पर जिसने सूर्य से तेजस्वी अक्षरों में जिसके लिखा 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है मैं उसे लेकर ही रहूंगा।' उन भारतीय स्वातंत्र्य संघर्ष के महान नायक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की सौंवीं पुण्यतिथि १ अगस्त २०२० पर शत शत नमन।

*****

एक प्रसंग

बोर्डिंग हाऊस के छज्जे पर बैठ गपशप कर रहे थे कुछ बालक।

'अगर इस भवन में आग लग जाये और जीने का मार्ग लपटों में घिर जाये तो भला कैसे निकलोगे बाहर?' सहसा ही एक बालक ने प्रश्न रख दिया और सब बालक उसका उत्तर सोचने लगे।

'जल्दी बोलो' प्रश्न करने वाले बालक ने कहा।

'जरा सोच तो लेने दो भाई!' एक दूसरे बालक ने उत्तर दिया।

'और यदि आग अपने इतने निकट आ जाये कि सोचने का अवसर ही न हो तब? तब सोचने के लिए समय कहाँ से लाओगे?' उस बालक ने प्रश्न किया।

तब? तब अपनी धोती को छज्जे से बांध कर लटका देंगे और उसके सहारे जायेंगे' उसने उत्तर दिया।

'नहीं, इसमें भी देरी लगेगी' उन्हीं में बैठे एक अन्य बालक ने कहा– 'हो सकता है कि हम उस समय धोती बांधे हुवे ही न हों।

'तब तुम्ही बताओ न कि क्या करोगे उस समय?' प्रश्न करने वाले बालक ने उससे पूछा।

'मैं!' उसने अपनी लांग को कसते हुए उत्तर दिया– मैं तो इस प्रकार तैयार होऊँगा और फिर अगले ही क्षण इस प्रकार छज्जे से कूद पड़ूंगा' और कहते कहते वह बालक सचमुच ही छलाँग लगा कर छज्जे से सड़क पर कूद पड़ा।

शेष सभी बालक सहम उठे। वे दुर्घटना की आशंका से व्याकुल होकर जीने के मार्ग से नीचे सड़क की ओर दौड़े किन्तु यह देखकर आश्चर्य चकित रह गये कि छज्जे से कूद जाने वाला बालक बड़ी तेजी से दौड़ता हुआ जीने के द्वारा उनके निकट ही आ रहा है।

जानते हो यह साहसी बालक कौन था? वह था बाल गंगाधर जिसे आज सारा संसार लोकमान्य तिलक के नाम से ही जानता और पहचानता है, जिसने हम गुलाम भारतीयों को स्वराज्य के महामंत्र से दीक्षित कर हमें स्वतंत्रता के मंदिर का मार्ग दिखाया था।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०७/२०२०
प्रेषण तिथि ३०/०७/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना